संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

जुलाई-सितंबर 2025

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार

न्यूज़लेटर

प्रमुख विशेषताएँ

हिमालय के सीमावर्ती गाँव: पर्यटन विकास के विशेष संदर्भ में वाईब्रेंट विलेज कार्यक्रम

जल जीवन मिशन:असम के परिपेक्ष्य में

गट माइक्रोबियल जीनोमिक्स अध्ययन: शोम्पेंन जारवा जनजातीय समूहों के अध्ययन

ईएचएसएएस (एहसास – स्मार्ट इंडिया में स्वस्थ और सफलवृद्धावस्था की खोज)

विरासत एवं संग्रहालय अनुभाग

कावड़ एक राजस्थानी कथात्मक कलाकृति(कथापेटी)

भीम–भीमिन की धातु की प्रतिमा

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (AnSI) सामाजिक-सांस्कृतिक और जैविक विविधता के वैज्ञानिक अध्ययन में भारत की अग्रणी राष्ट्रीय संस्था है। अपने प्रतिष्ठित अनुसंधानों और मानवविज्ञान अध्ययनों के माध्यम से यह देश के विविध समुदायों की समझ को समृद्ध करने के साथ-साथ राष्ट्रीय विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

संदेश

गुणवत्ता, नवाचार और विश्वास का संकल्प

हमारे लिए यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि एक लम्बे अंतराल के बाद पुनः न्यूजलेटर का प्रकाशन किया जा रहा है और वह भी हिंदी में। हम प्रयास करेंगे कि इसका प्रकाशन अनवरत होता रहे। साथ ही मैं इसके प्रकाशन कार्य में सहयोग करने वाले सभी कार्मिकों को बधाई देता हूँ।

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (ANTHROPOLOGICAL SURVEY OF INDIA) अपने स्थापना काल से ही भारत की विविध नृजातीय, सांस्कृतिक और सामाजिक संरचनाओं के वैज्ञानिक अध्ययन हेतु तत्पर रहा है। वर्तमान में सर्वेक्षण में संचालित राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर की परियोजनाएँ न केवल हमारे समाज की जटिलता को समझने में सहायक हैं, बल्कि राष्ट्रीय नीति निर्माण और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

प्रमुख परियोजनाओं में भारत की जनजातीय और गैर-जनजातीय समुदायों के समकालीन जीवन, उनकी परंपराओं, भाषाई विविधता तथा सांस्कृतिक अनुकूलन की प्रक्रियाओं पर विस्तृत अध्ययन शामिल है। शारीरिक मानवविज्ञान के क्षेत्र में हम मानवीय जैव-विविधता, पोषण स्तर, स्वास्थ्य पैटर्न, तथा आनुवंशिक संरचना से संबंधित महत्वपूर्ण शोध कर रहे हैं, जो सार्वजनिक स्वास्थ्य नीतियों के लिए उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं।

सांस्कृतिक-मानवविज्ञान से जुड़े अध्ययनों के माध्यम से हम शहरीकरण, प्रवासन, आजीविका के नए रूपों, तथा बदलते सामाजिक संबंधों पर विशेष ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त, संग्रहालयीय परियोजनाओं के माध्यम से देशभर से एकत्रित सांस्कृतिक संग्रहों का डिजिटलीकरण किया जा रहा है, ताकि शोधार्थियों और आम जनमानस को समृद्ध ज्ञान-संसाधनों तक सुलभ पहुँच मिल सके।

इन सभी प्रयासों का उद्देश्य भारतीय समाज की बहुआयामी पहचान को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझना, भविष्य की चुनौतियों के समाधान हेतु ज्ञान-संपदा तैयार करना, तथा हमारे सांस्कृतिक-सामुदायिक मूल्यों को संरक्षित रखना है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण की यह शोध-यात्रा आने वाले वर्षों में और अधिक सार्थक उपलब्धियाँ प्रदान करेगी।

प्रो.बी.वी.शर्मा, निदेशक

संस्थागत विशेष

सर्वेक्षण द्वारा "ईएचएसएएस: स्मार्ट इंडिया में स्वस्थ और सफल वृद्धावस्था पर अन्वेषण EHSAS (Exploring Healthy and Successful Aging in Smart India) परियोजना के अंतर्गत परियोजना के अनुसंधानकर्मियों में कुशलता विकास हेतु 16 जुलाई, 2025 को एक ऑनलाइन कार्यशाला एवं हैंड्स-ऑन प्रशिक्षण का आयोजन किया गया I

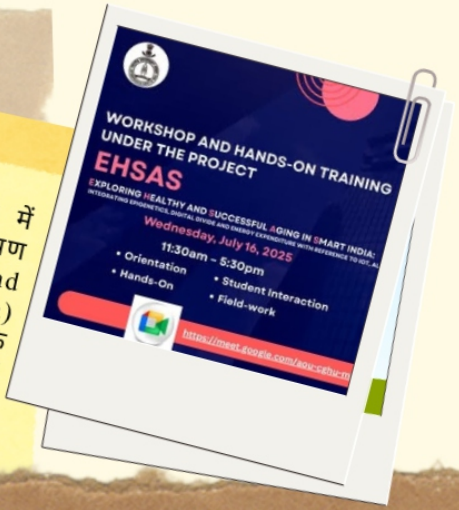

मध्य-क्षेत्रीय केंद्र, नागपुर द्वारा 17 जुलाई, 2025 को अपना स्थापना दिवस मनाया गया एवं इस अवसर पर सर्वेक्षण के निदेशक महोदय मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे और उन्होंने "मध्य भारत की भूमि और लोग" विषय पर पुस्तक प्रदर्शनी का वर्चुअल उद्घाटन किया। इस अवसर पर "मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण से मध्य क्षेत्र " विषय पर एक आंतरिक विचार-विमर्श भी आयोजित किया गया।

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण उत्तर-पश्चिम क्षेत्रीय केंद्र, देहरादून में दिनांक 08-09 सितम्बर को प्रोफ़ेसर बी.वी. शर्मा, निदेशक, भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, कोलकाता की अध्यक्षता में डॉ. अभिषिक्ता घोष रॉय, कार्यालय अध्यक्ष, उत्तर पश्चिम क्षेत्रीय केंद्र देहरादून के मार्गदर्शन में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी, "हिमालयी रहस्य: चुनौतियाँ एवं आकांक्षाएं" ऑनलाइन माध्यम से आयोजित की गयी I उक्त दो दिवसीय संगोष्ठी में सर्वेक्षण एवं अन्य राष्ट्रीय स्तर के मानवविज्ञान क्षेत्र के विशेषज्ञों ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये I

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण और वेस्ट बंगाल स्टेट यूनिवर्सिटी (WBSU) के बीच "अंतर्विषयक अनुसंधान तथा शैक्षणिक पहलों में सहयोग" को लेकर एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए गए। इस समझौता ज्ञापन पर सर्वेक्षण के निदेशक प्रो. बी. वी. शर्मा तथा वेस्ट बंगाल स्टेट यूनिवर्सिटी के कुलसचिव (रजिस्ट्रार) श्री तपन दत्ता ने हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर भा.मा.सर्वे. के उपनिदेशक डॉ. अमित कुमार घोष, वरिष्ठ पारिस्थितिकीविद् डॉ. उमेश कुमार, मानवशास्त्र विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष प्रो. सुबीर बिस्वास, सहायक प्रोफेसर डॉ. अभिजीत दास तथा वेस्ट बंगाल स्टेट यूनिवर्सिटी के अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहे।

सर्वेक्षण में दिनांक 23.09.2025 को मुख्यालय एवं सभी क्षेत्रीय केन्द्रों के मानवविज्ञानियों/ अनुसंधान कर्मियों के लिए राजभाषा अनुभाग के समन्वय से एक दिवसीय ऑनलाइन हिंदी संगोष्ठी, 'हिंदी रिपोर्ट लेखन एवं शोध निष्कर्षों का प्रचार-प्रसार: राष्ट्रीय परियोजना जल जीवन मिशन के सामाजिक प्रभाव का मूल्यांकन' के विशेष सन्दर्भ में आयोजित की गयी, जिसमे निदेशक महोदय ने हिंदी में शोध लेखन की संभावनाओं और उसके अंतर्गत आने वाली चुनौतियों पर चर्चा की I

अनुसंधानिक गतिविधियाँ

जल जीवन मिशन के माध्यम से ग्रामीण भारत में रूपांतरणकारी परिवर्तन: एक नृविज्ञानात्मक दृष्टिकोण से सामाजिक प्रभाव का मूल्यांकन

जल जीवन मिशन-2019 (JJM) भारत सरकार की एक महत्वाकांक्षी योजना है, जिसका उद्देश्य सभी नागरिकों को सुरक्षित, सुलभ और किफायती पेयजल उपलब्ध कराना है। यह कार्यक्रम जल संरक्षण, वर्षा जल संचयन और भूजल पुनर्भरण को बढ़ावा देने के साथ-साथ स्थानीय समुदायों और संस्थाओं को अपने जल संसाधनों के कुशल प्रबंधन के लिए सशक्त बनाने पर विशेष बल देता है।

इन लक्ष्यों को केंद्र में रखते हुए भारतीय मानववैज्ञानिक सर्वेक्षण ने असम राज्य के कार्बी आंगलोंग जिले के हाथीपाड़ा और दिहिंगिया तथा शिवसागर जिले के लाचेन और लेपाई गाँवों में 30 दिनों तक मानववैज्ञानिक तरीकों और तकनीकों के माध्यम से विभिन्न समुदायों पर जल जीवन मिशन के सामाजिक प्रभाव को समझने का प्रयास किया।

कार्बी आंगलोंग, असम

अध्ययन किए गए गाँवों में विभिन्न जनजातीय और जातीय समूह निवास करते हैं। हाथीपाड़ा में बोडो, दिमासा, कार्बी, तीवा, कोरकू, कुर्मी, कौल, पनिका और दहेक समुदाय हैं, जबकि दिहिंगिया में अहोम, सुतिया, ब्राह्मण, आदिवासी, कार्बी और नेपाली समुदाय हैं। लेपाई गाँव में मिशिंग, नेपाली, अहोम, सुतिया, झालो-मालो आदि समुदाय रहते हैं, वहीं लाचेन गाँव में अहोम, मिशिंग, मल्लाह, कुर्मी और राजपूत समुदाय शामिल हैं।

हर गाँव में एक "सरकारी गाँव बूढ़ा" अर्थात "गाँव का मुखिया" होता है जो हर समुदाय का प्रतिनिधित्व करता है। सरकारी गाँव बूढ़ा कानूनी मामलों में प्रमाणपत्र जारी करने और ब्लॉक या जिला स्तर के प्रशासन में गाँववालों का प्रतिनिधित्व करने के लिए जिम्मेदार होता है। समुदाय के मुखिया झगड़ों, शादी के मामलों, छोटे-मोटे अपराधों और दूसरे मामलों में अपनी समुदाय का प्रतिनिधित्व करने के लिए जिम्मेदार होते हैं।

इस कार्यक्रम के तहत प्रत्येक घर को निःशुल्क नल-जल कनेक्शन उपलब्ध कराया गया, जिसके लिए ग्रामीणों को कोई अतिरिक्त शुल्क नहीं देना पड़ता। हालाँकि, इस व्यवस्था के संचालन एवं रखरखाव (मेंटेनेंस) की जिम्मेदारी सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से ग्रामीणों को निभानी होगी। इस उद्देश्य से प्रत्येक गाँव में पानी समितियों का

असम के कार्बी आंगलोंग में स्थानीय लोगों के साथ चर्चा के दौरान शोध टीम

गठन किया गया है। प्रत्येक टोले में जलमित्र प्रतिदिन सुबह लगभग 7:30 बजे, बिजली उपलब्ध होने पर, करीब 45 मिनट तक पानी की आपूर्ति सुनिश्चित करता है। वर्षा जल को घरों या धान के खेतों में बनाए गए तालाबों में संग्रहित किया जाता है, जबकि घरेलू उपयोग के बाद निकलने वाला पानी घर के पीछे बनी छोटी नालियों के माध्यम से पान, सुपारी एवं सब्जी के खेतों तक पहुँचता है, जिससे उनकी सिंचाई होती है। जल जीवन मिशन के अंतर्गत मिलने वाला पानी पीने, घरेलू उपयोग और पशुओं के लिए पर्याप्त है। ग्रामीण इसे साफ, रंग-गंध-रहित और स्वास्थ्य के लिए लाभकारी मानते हैं। अधिकांश लोगों ने खाना पकाने में इसके उपयोग को सुरक्षित बताया है, साथ ही स्वास्थ्य में सुधार और जल-जनित बीमारियों में कमी दर्ज की गयी है। इस योजना का विशेष सकारात्मक प्रभाव महिलाओं के जीवन पर पड़ा है। पहले, हैंडपंप की अनुपस्थिति में महिलाओं को दिन में तीन बार 200–300 मीटर दूर से पानी लाना पड़ता था।अब उन्हें पानी लाने में समय और श्रम नहीं लगाना पड़ता, जिससे वे बुनाई जैसे कार्यों में अधिक समय दे कर आत्मनिर्भर बन रही हैं। बच्चों की देखभाल और शिक्षा पर भी इसका अच्छा असर पड़ा है, क्योंकि महिलायें अब अधिक समय घर और परिवार को दे रही हैं।

कुल मिलाकर जल जीवन मिशन असम के इन ग्रामीण क्षेत्रों में न केवल जल उपलब्धता सुनिश्चित कर रहा है, बल्कि उन्हें जल संरक्षण के प्रति संवेदनशील और सक्रीय भी बना रहा है साथ ही यह सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण और जीवन स्तर में सुधार का भी मजबूत आधार बन रहा है।

शिवसागर, असम में *FGD* के दौरान

श्री राजकिशोर महतो एवं अनुसन्धान दल

अनुसंधानिक गतिविधियाँ

हिमालयी सीमा गाँव: पर्यटन विकास के विशेष संदर्भ में वाइब्रेंट विलेज कार्यक्रम का प्रभाव मूल्यांकन

गाँव भारतीय समाज और संस्कृति की बुनियादी इकाई हैं। परंतु ग्रामीण क्षेत्रों में पानी, बिजली, सुगम सड़क, शिक्षा तथा रोजगार जैसी मूलभूत आवश्यकताओं की कमी के कारण लोग अच्छे जीवन की तलाश में लगातार गाँव छोड़कर शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। यह समस्या केवल किसी एक गाँव, क्षेत्र या राज्य तक सीमित नहीं है, बल्कि उन सभी गाँवों की है जो आज भी आधुनिक सुविधाओं से वंचित हैं। पलायन की इस प्रक्रिया के चलते अनेक गाँव अपने अस्तित्व तक को खोते जा रहे हैं। उत्तराखंड में ऐसे निर्जन हो चुके गाँवों को 'भूत गाँव' तक कहा जाने लगा है। यद्यपि जनशून्य होने की यह स्थिति मुख्यतः पहाड़ी क्षेत्रों में अधिक दिखाई देती है , क्योंकि ये गाँव आज भी देश की मुख्यधारा के विकासीय मानक से काफी दूर हैं।

गुए, हिमाचल प्रदेश

गुंजी, उत्तराखंड

मलारी, उत्तराखंड

इन गाँवों के अस्तित्व को बचाने के लिए मुख्य चुनौती गाँव से पलायन को रोकना था। जिसके लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसरों की पहचान करना और आधारभूत संरचना का विकास करना अत्यंत आवश्यक हो गया। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए केंद्र सरकार ने फरवरी 2023 में वाइब्रेंट विलेज कार्यक्रम को एक विशेष पहल के रूप में लागू किया। भारत सरकार ने इस कार्यक्रम के अंतर्गत भारत–चीन सीमा पर स्थित गाँवों के सर्वांगीण विकास को प्राथमिकता देते हुए इसकी शुरुआत की। इस कार्यक्रम के तहत 17 गाँवों, जिनमें अरुणाचल प्रदेश के ज़ेमिथांग, टूटिंग, तक्सिंग, छयांग्ताजो और किबिथू; सिक्किम के लाचेन, नथांग और लाचुंग; उत्तराखंड के नीती, माना, मलारी और गूंजी; हिमाचल प्रदेश के गिपू, लालुंग और चारंग खास; तथा लद्दाख केंद्र शासित प्रदेश के चुसूल और कोज़ोंक, को सर्वांगीण विकास के साथ साथ विशेष रूप से पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित करने के लिए चुना गया है।

गुंजी, उत्तराखंड

इन चयनित 17 गाँवों में वाइब्रेंट विलेज कार्यक्रम से होने वाले प्रभावों को समझने हेतु भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण ने वर्ष 2024 में "हिमालयी सीमा के गाँव: वाइब्रेंट विलेज कार्यक्रम के प्रभाव का पर्यटन विकास के विशेष संदर्भ में मूल्यांकन" शीर्षक से एक अनुसंधान परियोजना प्रारंभ की। इस महत्वाकांक्षी कार्यक्रम के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक संस्थाओं पर पड़ने वाले प्रभावों को समझना; इनके नृवितान्तिक तथ्यों का विश्लेषण करना; अंतरराष्ट्रीय सीमा को लेकर स्थानीय लोगों की धारणाओं का अध्ययन करना; सीमा का उनके जीवन पर पड़ने वाला प्रभाव को जानना; गाँव और क्षेत्र में रोजगार के संभावित स्रोत, विशेषकर पर्यटन, की पहचान करना; तथा वाइब्रेंट विलेज कार्यक्रम के प्रति स्थानीय समुदाय के विचारों को समझना, अपने समाज, संस्कृति आदि को लेकर लोगों में जागरूकता और उनके संरक्षण के लिए किये जा रहे स्थानीय उपायों को समझना, इस परियोजना के प्रमुख उद्देश्य हैं।

लालुंग, स्पीति , हिमाचल प्रदेश

गुए, हिमाचल प्रदेश

इन उद्देश्यों के अनुरूप परियोजना के प्रथम चरण में अक्टूबर–नवंबर 2024 के दौरान अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम के चयनित गाँवों का अध्ययन किया गया, जबकि द्वितीय चरण में जून–जुलाई 2025 के दौरान उत्तराखंड के गूंजी, नीती और मलारी गाँवों तथा हिमाचल प्रदेश के लालुंग खास और गिपू गाँवों का अध्ययन किया गया।

डॉ. करुणा शंकर पाण्डेय

अनुसंधानिक गतिविधियाँ

राष्ट्रीय परियोजना 'भारत के PVTGS के गट-माइक्रोबियल जीनोमिक्स का अध्ययन:अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह के जारवा और शोम्पेन समुदाय के विशेष सन्दर्भ में'

भारत के पीवीटीजी के गट माइक्रोबियल जीनोमिक्स पर अध्ययन भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण द्वारा शुरू की गई अपनी तरह की एक राष्ट्रव्यापी पहल है, जिसका उद्देश्य अतिसंवेदनशील जनजातीय समुदायों में गट माइक्रोबायोटा की विविधता और संरचना को समझना है और यह जांचना है कि आहार, आधुनिक चिकित्सा के संपर्क और एंटीबायोटिक-प्रतिरोधी रोगाणुओं

अंडमान-निकोबार द्वीपसमूह में शोम्पेन जनजातियों के बीच पारंपरिक बसावट पैटर्न

की उपस्थिति जैसे कारक उनके गट स्वास्थ्य(Gut Health) को कैसे प्रभावित करते हैं। हाल ही में, सर्वेक्षण ने भारत की दो सबसे अधिक संवेदनशील जनजातीय समुदायों अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह के शोम्पेन और जारवा के बीच सफलतापूर्वक क्षेत्रकार्य (फ़ील्डवर्क) किया, जो इस राष्ट्रीय परियोजना में एक महत्वपूर्ण पड़ाव को दर्शाता है।

अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह की जारवा और शोम्पेन समुदायों के बीच क्षेत्रकार्य (फ़ील्डवर्क) करना भारत के पीवीटीजी समुदायों पर आधारित गट माइक्रोबियल जीनोमिक्स अध्ययन के सबसे चुनौतीपूर्ण, लेकिन अकादमिक रूप से अत्यंत महत्त्वपूर्ण चरणों में से एक साबित हुआ। ये समुदाय भारत के सबसे दूरस्थ, घने जंगलो और पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्रों में रहते हैं, जहाँ पहुँचना समुद्र, जंगल, अप्रत्याशित मौसम तथा उनकी एकांतता और स्वायत्तता की रक्षा हेतु बनाए गए कड़े विधिक और नैतिक प्रोटोकॉल के कारण सीमित हो जाता है।

अंडमान निकोबार में क्षेत्रकार्य के दौरान

अंडमान निकोबार में क्षेत्रकार्य के दौरान

जारवा और शोम्पेन, जिन्होंने सदियों तक बाहरी दुनिया से बहुत कम संपर्क के साथ जीवन व्यतीत किया है, जैविक और सांस्कृतिक रूप से अत्यंत अलग-थलग मानव आबादियों की श्रेणी में शामिल हैं। उनकी जीवनशैली, आहार और प्राकृतिक पर्यावरण के साथ उनकी सहभागिता आज भी काफी हद तक पारंपरिक है। अतः वे प्राकृतिक मानव गट (आंत) माइक्रोबायोम को समझने के लिए महत्वपूर्ण माध्यम है जो औद्योगिक खाद्य प्रणालियों और आधुनिक चिकित्सा के व्यापक प्रभावों से लगभग अछूता है। ऐसी आबादियों से डेटा एकत्र करना इसे समझने के लिए एक दुर्लभ आधार प्रदान करता है कि एक पारंपरिक या पूर्वजों के जैसा गट (अंत) माइक्रोबायोम कैसा हो सकता है।

कई प्रकार के क्षेत्र कार्य संचालन और पर्यावरणीय चुनौतियों के बावजूद, इस अनुभव ने मानव गट (आंत) स्वास्थ्य की हमारी समझ को आगे बढ़ाने में क्षेत्र-आधारित मानवविज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका को दृढ़ता से पुनर्स्थापित किया। इतनी कठिन परिस्थितियों में भी इस चरण को सफलतापूर्वक पूरा करना न केवल एक वैज्ञानिक मील का पत्थर है, बल्कि मानव गट(आंत) माइक्रोबायोम के अनदेखे आयामों की खोज में भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण की स्पष्ट दृष्टि का भी प्रतिबिंब है। हम भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण के प्रति इस महत्वपूर्ण फील्डवर्क और शोध प्रयास का हिस्सा बनने के अमूल्य अवसर के लिए गहराई से आभारी हैं।

डॉ. एन. सोमोरजित सिंह एवं अनुसन्धान दल

अनुसंधानिक गतिविधियाँ

ईएचएसएएस (एहसास – स्मार्ट इंडिया में स्वस्थ और सफल वृद्धावस्था पर अन्वेषण

भारत में जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ने के साथ-साथ वरिष्ठ आयु वर्ग की जनसंख्या में भी अभूतपूर्व वृद्धि हुई है I इसी के साथ, यह समझना अत्यंत आवश्यक हो गया है कि वरिष्ठ नागरिक तेज़ी से बदलते सामाजिक और तकनीकी परिवेश में अधिक समय तक, स्वस्थ और गरिमापूर्ण जीवन कैसे जी सकते हैं। एहसास (स्मार्ट इंडिया में स्वस्थ और सफल वृद्धावस्था की खोज), राष्ट्रीय परियोजना, जो भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (ANTHROPOLOGICAL SURVEY OF INDIA) द्वारा संचालित की जा रही है, समकालीन भारत में वृद्धावस्था की बहुआयामी वास्तविकताओं को समझने की दिशा में एक अग्रणी पहल है। एहसास (स्मार्ट इंडिया में स्वस्थ और सफल वृद्धावस्था की खोज) एक राष्ट्रीय परियोजना है, जिसे भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (ANTHROPOLOGICAL SURVEY OF INDIA) द्वारा संचालित किया जा रहा है। यह परियोजना समकालीन भारत में वृद्धावस्था की बहुआयामी वास्तविकताओं को समझने की दिशा में एक अग्रणी पहल के रूप में उभरती है।

कोलकाता (न्यू टाउन) में क्षेत्रकार्य के दौरान

एहसास स्वस्थ और सफल वृद्धावस्था से संबंधित साक्ष्य-आधारित अंतर्दृष्टि की तत्काल आवश्यकता का उत्तर देता है। यह परियोजना संयुक्त राष्ट्र के स्वस्थ वृद्धावस्था दशक (2021–2030) के अनुरूप है और वरिष्ठ नागरिकों के बीच शारीरिक स्वास्थ्य, मनोवैज्ञानिक कल्याण, सामाजिक जुड़ाव तथा पर्यावरणीय समर्थन के बीच संतुलन बनाए रखने पर केंद्रित है। यह स्वीकार करते हुए कि वृद्धावस्था केवल एक जैविक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि सामाजिक, तकनीकी और पर्यावरणीय कारकों की जटिल अंतःक्रिया का परिणाम है, एहसास एक समन्वित और अंतर्विषयक ढाँचा अपनाता है।

अंडमान-निकोबार में शोधकर्ता वृद्धावस्था एवं स्वास्थ्य से संबंधित विषयों पर स्वास्थ्य पेशेवरों के साथ शैक्षणिक चर्चा में संलग्न हैं।

कोलकाता (न्यू टाउन) में साक्षात्कार के दौरान ईएचएसएएस (EHSAS) की शोध टीम

इस परियोजना का क्षेत्रकार्य वर्ष 2025 में शुरू हुआ । यह परियोजना स्मार्ट सिटी के संदर्भ में वृद्धावस्था का विशिष्ट रूप से अध्ययन करती है, जहाँ 9 स्मार्ट शहरों और 1 गैर-स्मार्ट शहर को शामिल कर यह समझने का प्रयास किया गया है कि डिजिटल अवसंरचना, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IOT) और मशीन लर्निंग (ML) वरिष्ठ नागरिकों के जीवन-स्तर को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। साथ ही, यह डिजिटल डिवाइड (DIGITAL DIVIDE) , सामाजिक एकाकीपन , बदलती पारिवारिक संरचनाएँ तथा वृद्धजनों की समुचित पारंपरिक देखभाल प्रणालियों के क्षरण जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों को भी संबोधित करती है।

स्वस्थ एवं सफल वृद्धावस्था को समझने के उद्देश्य से शोधकर्ता सूचनादाताओं के मानवमितीय माप ले रहे हैं।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित स्मार्ट और गैर-स्मार्ट शहरों की तुलना के माध्यम से एहसास क्षेत्रीय विविधताओं को समेटते हुए वृद्धावस्था के सामान्य प्रतिरूपों की पहचान करने का प्रयास करता है। यहाँ शारीरिक ऊर्जा संतुलन, शारीरिक गतिविधि तथा जीवनशैली संबंधी अभ्यासों पर विशेष बल दिया गया है, क्योंकि ये जैविक वृद्धावस्था को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

डॉ. मिठुन सिकदार एवं अनुसन्धान दल

हिमालयी सीमा का गूंजी गाँव:

वाइब्रेंट विलेज कार्यक्रम के प्रभाव का पर्यटन विकास के विशेष संदर्भ में मूल्यांकन

भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण की राष्ट्रीय परियोजना "हिमालयी सीमा के गाँव: वाइब्रेंट विलेज कार्यक्रम के प्रभाव का पर्यटन विकास के विशेष संदर्भ में मूल्यांकन" के अंतर्गत जून 2025 में उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले स्थित गूंजी गाँव का अध्ययन किया गया। इस गाँव में प्रमुख रूप से रंग और शिल्पकार समुदाय निवास करते हैं। रंग समुदाय को संवैधानिक रूप से भोटिया नाम से पहचान प्राप्त है और यह अनुसूचित जनजाति श्रेणी में शामिल है जबकि शिल्पकार अनुसूचित जाति है।

गूंजी गाँव पिथौरागढ़ जिले की तीन प्रमुख घाटियों चौदास, दरमा और व्यास में से व्यास घाटी का एक अत्यंत महत्वपूर्ण गाँव है। यह गाँव तिब्बत (चीन) और नेपाल से अंतर्राष्ट्रीय सीमा साझा करता है। साथ ही, धारचूला से कैलाश मानसरोवर तथा आदि कैलाश जाने वाला मार्ग गूंजी से अलग होता है, जिसके कारण यह गाँव लम्बे समय से तीर्थयात्रियों के लिए ठहराव का एक प्रमुख केंद्र रहा है। किंवदंतियों के अनुसार यह घाटी व्यास मुनि की कर्मस्थली रही है, जिसके आधार पर इस घाटी का नाम व्यास घाटी पड़ा, जो इस क्षेत्र की आध्यात्मिक विशेषता को और समृद्ध करता है।

गुंजी गाँव वर्ष के छह महीने हिमाच्छादित रहता है। गूंजी गाँव केवल गर्मी के मौसम में ही रहने लायक होता है और सर्दी में निचले क्षेत्रों की ओर चले जाते थे। यहाँ के लोग ग्रीष्मकाल गाँव में रहकर व्यापार के उद्देश्य से लिपुलेख के रास्ते तिब्बत जाते थे, जहाँ वे ऊन व उससे बने उत्पाद, नमक आदि का व्यापार करते थे। शीत ऋतु प्रारंभ होते ही यह समुदाय निचले क्षेत्रों की ओर प्रस्थान करता था, जिसे 'कुंचा' कहा जाता है। 'कुंचा' का अंतिम पड़ाव नेपाल के धुलीगढ़ा में होता था। इस ठहराव के दौरान वे विवाह जैसे संस्कार भी सम्पन्न करते थे तथा तिब्बत से लाए गए सामान को अनाज के बदले दूरस्थ क्षेत्रों में बेचते थे। ग्रीष्म ऋतु के आगमन के साथ वे पुनः गूंजी लौट जाते थे। इस प्रकार, गाँव के लोगों के तिब्बत के साथ दीर्घकालीन व्यापारिक और नेपाल के साथ सामाजिक-सांस्कृतिक संबंध रहे हैं, जो उनके अंतरराष्ट्रीय संपर्कों का द्योतक हैं। गाँव के लोगों का विस्तृत भौगोलिक विस्तार के बावजूद आधारभूत संरचना के अभाव में यह क्षेत्र लम्बे समय तक देश के अन्य भागों से कटा रहा और समुदाय अपेक्षाकृत विलगित रहा।

समय के साथ, ग्रीष्मकाल में गाँव में रहने वाले बच्चों के लिए स्कूल और आंगनवाड़ी केंद्र भी स्थापित हुए, तथा शीतकालीन निवास-स्थल धारचूला में भी ऐसी संस्थाएँ खोली गईं। किन्तु शिक्षा और जीवनयापन के लिए धारचूला एवं अन्य क्षेत्रों में गाँव के लोगों के स्थायी रूप से बस जाने से गाँव में विद्यालय और आंगनवाड़ी केंद्र धीरे-धीरे बंद हो गए। गाँव की दुर्गमता और पैदल आवागमन की कठिनाई ने लोगों को अधिकांश समय गाँव से बाहर रहने हेतु बाध्य किया। आय के सीमित स्रोतों ने पलायन को और प्रबल किया।

गूंजी गाँव वर्ष 2019 में वाहन-योग्य सड़क मार्ग से जुड़ा, जिसने इसे धार्मिक महत्त्व के साथ-साथ एक उभरते पर्यटन क्षेत्र के रूप में नई पहचान दी। पर्यटन विभाग के आँकड़ों के अनुसार 2024 में कुल 29,423 पर्यटक गूंजी और आसपास के क्षेत्रों में आए, जबकि मई 2025 तक 8,565 पर्यटकों का आगमन दर्ज किया गया। महत्व की इस बढ़ती प्रवृत्ति और गाँव के वाइब्रेंट विलेज कार्यक्रम में शामिल होने से लोग पुनः गाँव की ओर उन्मुख हो रहे हैं। स्थानीय निवासी होमस्टे और रेस्टोरेंट जैसे आय-स्रोत विकसित कर रहे हैं तथा इस कार्यक्रम से बड़ी अपेक्षाएँ भी रखते हैं।

उत्तराखंड के गुंजी में पारंपरिक आवासीय वास्तुकला

गुंजी में क्षेत्रीकार्य के दौरान

गुंजी, उत्तराखंड

गुंजी पारंपरिक पोशाक

क्षेत्र पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। आदि कैलाश, ओम पर्वत, व्यास गुफा, काली नदी का उद्गम स्थल जैसे धार्मिक स्थल; काली और कुटी नदियाँ; ऊँची पर्वत-श्रृंखलाएँ; जंगल तथा विविध जीव-जंतु इस घाटी की प्राकृतिक सुंदरता को और बढ़ाते हैं। अतः गाँव और उसका परिवेश एक विकसित पर्यटन क्षेत्र बनने की पूर्ण संभावनाएँ रखता है, जो स्थानीय समुदाय के लिए सतत विकास एवं आजीविका का महत्वपूर्ण आधार बन सकता है।इन सबके बीच गाँव के लोगों की अपनी चिंताएँ भी हैं। पर्यटन क्षेत्र के विकास के साथ सरकारी कार्यालयों और आधारभूत सुविधाओं जैसे बिजली, चिकित्सा, पुलिस, फायर सेवा, कूड़ा निस्तारण आदि के लिए भूमि-अधिग्रहण से उनकी कई सामुदायिक भूमि उनसे दूर होती जा रही है। विस्थापन का डर भी उन्हें असहज कर रहा है। परियोजनाओं में स्थानीय सहभागिता की कमी उन्हें योजनाओं के उद्देश्यों, प्रभावों और लाभों की जानकारी से वंचित रखती है। कूड़ा प्रबंधन और सांस्कृतिक संरक्षण भी गंभीर मुद्दे हैं, जिनसे वे अभी पर्याप्त रूप से परिचित नहीं हैं।

कुल मिलाकर, वाइब्रेंट विलेज कार्यक्रम के अंतर्गत गूंजी गाँव में पर्यटन विकास की व्यापक संभावनाएँ हैं। यदि विकासात्मक उपायों को उद्देश्यपरक और विधिवत लागू किया जाए, तो गाँव का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित किया जा सकता है, जो न केवल गाँव को पुनर्जीवित करेगा, बल्कि इसे सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से भी समृद्ध बनाएगा। इस प्रक्रिया में सामुदायिक सहभागिता एक प्रमुख साधन सिद्ध हो सकती है।

डॉ. करुणा शंकर पाण्डेय

अद्यतित त्रैमासिक परियोजना

- भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण द्वारा “भारत के छत्तीसगढ़ राज्य की अंतर-राज्यीय सीमाओं में जातीय समूह: पहचान, अंतर-जातीय संबंध और विकासात्मक चिंताएँ” क्षेत्रीय परियोजना के अंतर्गत छत्तीसगढ़ व पडोसी राज्यों ओड़िशा और झारखंड के सीमावर्ती क्षेत्रों में सांस्कृतिक मानवविज्ञान प्रभाग के अनुसंधान कार्मिकों ने 28 जून, 2025 से अगले 45 दिनों तक क्षेत्र कार्य किया I

- सर्वेक्षण के सांस्कृतिक मानवविज्ञान और शारीरिक मानवविज्ञान प्रभाग के अनुसंधान कर्ताओं द्वारा राष्ट्रीय परियोजना "ईएचएसएएस: स्मार्ट इंडिया में स्वस्थ और सफल वृद्धावस्था पर अन्वेषण: आईओटी, एआई और एमएल के संदर्भ से एपिजेनेटिक्स, डिजिटल डिवाइड और ऊर्जा व्यय का एकीकरण" के अंतर्गत रायपुर शहर में दिनांक 16 से 25 जुलाई, 2025 तक फील्डवर्क किया गया। उपरोक्त परियोजना के अंतर्गत पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर के मानवविज्ञान विभाग के 26 छात्र सर्वेक्षण में अपने इंटर्नशिप कार्यक्रम के दौरान इस फील्डवर्क में सहयोगी रहे I

- सर्वेक्षण के शारीरिक मानवविज्ञान प्रभाग के अनुसंधान कर्मियों ने राष्ट्रीय परियोजना “भारत के पीवीटीजी के बीच आंत-माइक्रोबियल जीनोमिक अध्ययन” के तहत 6 अगस्त, 2025 से 18 दिनों तक आंध्र प्रदेश के बोडो गडबा और बोंडो पोरजा आदिवासी समुदायों के विषय में जानकारी संग्रह करने के उद्देश्य से मल के नमूने और अन्य आवश्यक आंकड़ों को एकत्र करने के लिए क्षेत्रकार्य किया ।

- सर्वेक्षण के सांस्कृतिक मानवविज्ञान प्रभाग के अनुसंधान कार्मिकों द्वारा दो राष्ट्रीय परियोजनाओं “हिमालय के सीमावर्ती गाँव: पर्यटन विकास के विशेष संदर्भ में वाईब्रेंट विलेज कार्यक्रम का प्रभाव मूल्यांकन” व “हार्नेसिंग द रूट्स आफ इंडियन सिविलाइजेशन: एन एन्थ्रोपोलोजिकल स्टडी ऑन हिमालयन बॉर्डर एरिया” के अंतर्गत जून-जुलाई 2025 में उत्तराखंड के गूंजी, नीती और मलारी गाँवों तथा हिमाचल प्रदेश के लालुंग खास और गिपू गाँवों का अध्ययन किया गया।

असम के कार्बी क्षेत्र में क्षेत्रकार्य के दौरान

ईएचएसएएस प्रोजेक्ट में कोलकाता के न्यू टाउन में क्षेत्रीकार्य के दौरान

छत्तीसगढ़ की अंतर-राज्यीय सीमाओं में क्षेत्रकार्य के दौरान

अंडमान-निकोबार में शोधकर्ता वृद्धावस्था एवं स्वास्थ्य से संबंधित विषयों पर स्वास्थ्य पेशेवरों के साथ शैक्षणिक चर्चा में संलग्न हैं।

संग्रहालयी विरासत

कावड़

कावड़ एक विशिष्ट राजस्थानी कथात्मक कलाकृति(कथापेटी) है, जो विशेष रूप से रामायण के चित्रण के माध्यम से गहरा सांस्कृतिक अर्थ संजोए हुए है। इसके केंद्र में स्थापित राम, सीता और लक्ष्मण की लकड़ी की मूर्तियाँ तथा पैनलों पर उकेरे गए महाकाव्य के प्रमुख प्रसंग इसे समुदायों के लिए एक दृश्य धर्मग्रंथ का रूप देते हैं जो मौखिक परंपरा पर अत्यधिक निर्भर रहे हैं। राजस्थान की कुशल सुतार (सुथार) समुदाय द्वारा निर्मित यह कावड़ मोड़कर बंद की जाने वाली संरचना, चटख रंगों और बारीक कारीगरी के कारण उस पुरातन परंपरा को दर्शाती है जिसमें कलात्मक अभिव्यक्ति और धार्मिक कथन को एक साथ जोड़ा गया है। उदयपुर स्थित क्षेत्रीय मानवविज्ञान संग्रहालय में संरक्षित यह कलाकृति पौराणिक कथाओं की सांस्कृतिक निरंतरता और कारीगर समुदाय की विरासत को उजागर करती है।

पैनलों पर चित्रित यह दृश्य एक शिक्षण उपकरण के रूप में काम करते हैं, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में, जहाँ धर्मनिष्ठा और भक्ति के संदेश आकर्षक दृश्य कथाओं के माध्यम से सम्प्रेषित किए जाते हैं।
आर्थिक दृष्टि से कावड़ स्थानीय कारीगरों की आजीविका का महत्वपूर्ण सहारा है। पर्यटकों, शोधकर्ताओं और संग्रहकर्ताओं की बढ़ती रुचि से कावड़ का मूल्य और बढ़ गया है, क्योंकि इसे राजस्थान के एक विशिष्ट सांस्कृतिक उत्पाद के रूप में देखा और सराहा जा रहा है।

भीम–भीमिन की धातु की प्रतिमा

भीम–भीमिन की धातु की मूर्तियाँ बस्तर की आदिवासी समुदायों के सांस्कृतिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं और इनके विश्वासों और रोजमर्रा की जरूरतों से गहरा संबंध रखती है। ये देवता विशेष रूप से वर्षा लाने के विश्वास से जुड़े होने के कारण पूजनीय हैं, जो क्षेत्र में कृषि के लिए अत्यंत आवश्यक है। इनकी पूजा समुदाय और प्राकृतिक शक्तियों के बीच गहरे आध्यात्मिक संबंध को दर्शाती है। टिकाऊ धातु से बनी ये मूर्तियाँ घरवा धातु शिल्पी समुदाय की कलात्मक परंपरा को भी उजागर करती हैं, जिनकी जटिल कारीगरी और पारंपरिक डिज़ाइन कई पीढ़ियों के अनुभव और कौशल को प्रदर्शित करते हैं। आज, इस सांस्कृतिक कलाकृति का एक नमूना क्षेत्रीय मानवविज्ञान संग्रहालय, उप-क्षेत्रीय केंद्र, जगदलपुर में रखा है, जो इस परंपरा का दस्तावेज़ीकरण करने में मदद करता है।

सामाजिक रूप से, भीम–भीमिन की मूर्तियाँ समुदाय को एक साथ बाँधने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वर्षा या आशीर्वाद के लिए किए जाने वाले अनुष्ठान सामूहिक कार्यक्रम होते हैं, जहाँ लोग इकट्ठा होते हैं और यह एकता और सामूहिक पहचान को मजबूत करता है। ये प्रथाएँ घरवा कारीगरों की सांस्कृतिक स्थिति को भी मजबूती देती हैं, जो न केवल कुशल शिल्पी हैं बल्कि धार्मिक और सामाजिक जीवन में भी अहम योगदान देते हैं। धातु शिल्प का ज्ञान, जो परिवारों में पीढ़ी दर पीढ़ी सिखाया जाता है, सांस्कृतिक निरंतरता बनाए रखने और पारंपरिक कला को नई पीढ़ियों तक जीवित रखने में मदद करता है।

सर्वेक्षण के अन्य महत्वपूर्ण क्रियाकलाप

2 जुलाई 2025 को संस्कृति मंत्रालय के सचिव श्री विवेक अग्रवाल, संयुक्त सचिव श्रीमती लिली पांडेया और उप-सचिव श्री अरुण कुमार ने भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, मुख्यालय, कोलकाता का दौरा किया। निदेशक, प्रोफेसर बी. वी. शर्मा ने उनका स्वागत किया। अतिथियों ने पेलियोएंथ्रोपोलॉजी संग्रहालय, डीएनए प्रयोगशाला और निर्माणाधीन केंद्रीय संग्रहालय का निरीक्षण किया।

श्री अग्रवाल ने भा.मा.सर्वे. शोध और सामुदायिक सहभागिता को सुदृढ़ करने के विषय पर अपने दृष्टिकोण साझा किए तथा संस्थान के कार्यों को राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के अनुरूप आगे बढ़ाने पर बल दिया।

3 अगस्त 2025 को दिल्ली विश्वविद्यालय की प्रसिद्ध मानवविज्ञानी व प्रोफेसर सुभद्रा चन्ना ने भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, मुख्यालय कोलकाता का दौरा किया। इस अवसर पर एक अकादमिक संवाद सत्र आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता निदेशक प्रोफेसर बी. वी. शर्मा ने की। प्रोफेसर चन्ना ने विशेष रूप से हिमालयी सीमा-ग्रामों से जुड़े मानवविज्ञान अध्ययनों पर अपने विचार साझा किए, जिनसे शोधकर्ताओं को मौजूदा मानववैज्ञानिक तकनीकियों को नए दृष्टिकोण से समझने की प्रेरणा मिली।

भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण, मुख्यालय, कोलकाता में हिंदी पखवाड़ा–2025 के आयोजन के दौरान दिनांक 15 सितम्बर से 29 सितंबर तक पुस्तकालय विभाग द्वारा हिंदी पुस्तकों की प्रदर्शनी का आयोजन, कार्यालय के कार्मिकों को हिंदी पुस्तकें पढ़ने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए किया गया। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन निदेशक,भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण प्रो.बी.वी.शर्मा द्वारा किया गया। कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पुस्तकों और प्रकाशनों को भी इस प्रदर्शनी में सम्मिलित किया गया। सभी कार्मिकों ने इस प्रदर्शनी में उपस्थित होकर प्रदर्शित पुस्तकों को देखा।

एफ़5 अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव 2025, संस्कृति मंत्रालय और भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण के सहयोग से 5–8 सितम्बर 2025 तक सॉल्ट लेक, कोलकाता स्थित भा.मा.वि.सर्वे. ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया। पद्मश्री ममता शंकर मुख्य अतिथि रहीं। विजुअल एंथ्रोपोलॉजी डिवीजन की डॉक्यूमेंटरी फिल्मों के माध्यम से संस्थान के कार्यों को रेखांकित करते हुए उप-निदेशक डॉ. अमित कुमार घोष ने महोत्सव में सभी का स्वागत किया। उद्घाटन सत्र का समापन प्रो. शालिनी लित्तिकर (नागपुर विश्वविद्यालय) के विचारों के साथ हुआ। 69 देशों की पुरस्कृत फिल्मों और टेलीफिल्मों की प्रस्तुति के साथ यह महोत्सव संस्कृति, जलवायु और संरक्षण पर वैश्विक दृष्टिकोण का प्रभावी मंच बनकर उभरा।

सर्वेक्षण के अन्य महत्वपूर्ण क्रियाकलाप

सर्वेक्षण ने “आजादी का अमृत महोत्सव” के तत्वावधान में भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के निर्देशानुसार "हर घर तिरंगा" अभियान में भाग लिया, जिसका उद्देश्य 5 से 15 अगस्त, 2025 के दौरान भारत की समृद्ध विरासत का उत्सव हर्सोल्लास के साथ मनाना और देशभक्ति की भावना को मजबूत करना था। सर्वेक्षण ने 15 अगस्त, 2025 को मुख्यालय और इसके क्षेत्रीय केंद्रों पर '79वां स्वतंत्रता दिवस' धूमधाम से मनाया।

सितम्बर माह में सर्वेक्षण के मुख्यालय सहित इसके सभी क्षेत्रीय केन्द्रों में हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्यालय में इस कार्यक्रम का उद्घाटन 15 सितम्बर ,2025 को निदेशक महोदय के कर कमलों से किया गया। साथ ही मुख्यालय के पुस्तकालय में हिन्दी पुस्तकों की प्रदर्शनी लगाई गई। सभी केन्द्रों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया।

मुख्यालय द्वारा “स्वच्छता ही सेवा अभियान 2025” के अंतर्गत “सफाई मित्र सुरक्षा शिविर” विषय पर 26 सितंबर 2025 को एक स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में मुख्यालय एवं पूर्वी क्षेत्रीय केंद्र के कार्मिकों के स्वास्थ्य की जाँच की गई तथा उन्हें आवश्यक चिकित्सीय परामर्श और स्वास्थ्य संबंधी सुझाव प्रदान किए गए।

भारत के ग्रामीण पशुधन बाजारों में पशु चिकित्सा विशेषज्ञों का योगदान

प्रो.बी.वी.शर्मा, निदेशक

नंजगुड, कर्नाटक में बाजार के दौरान

परिचय :

ग्रामीण क्षेत्रों में पशुधन बाज़ार, ज़रूरतमंद लोगों को पशुओं के बदले में नकदी प्राप्त करने की सुविधा देने के अलावा, स्वरोज़गार के महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता हैं। जहाँ एक ओर कई ग्रामीण परिवार सीधे तौर पर पशुधन व्यापार से अच्छी-खासी आय प्राप्त करते हैं, वहीं एक वर्ग उन व्यक्तियों का भी है जो इन बाज़ारों में विभिन्न प्रकार की और समान रूप से महत्वपूर्ण सहायक सेवाएँ प्रदान कर के अपनी आजीविका कमाते हैं। इन सेवाओं में बाज़ार पारिस्थितिकी तंत्र के संचालन में योगदान देने वाली सहायक गतिविधियाँ जैसे परिवहन, पशु देखभाल, खाद्य-आपूर्ति आदि शामिल हैं। ये पशुधन बाज़ार अपने आर्थिक मूल्य के अलावा, सामाजिक संपर्क, सामुदायिक नेटवर्किंग और सामाजिक समूहों के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका तय करते है। इस बहुआयामी महत्व के बावजूद, ग्रामीण अध्ययन में रूचि लेने वाले सामाजिक वैज्ञानिकों का पशुधन बाज़ारो पर अपेक्षाकृत कम ध्यान गया है, और इसलिए इनकी कई पक्ष अभी भी अध्ययन से अछूता है.

भारत में मौजूदा ग्रामीण अध्ययनों ने पारंपरिक पशु स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने वाले नृजातीय-पशु चिकित्सकों की महत्वपूर्ण भूमिका का दस्तावेजीकरण किया है। हालाँकि, पशुधन बाज़ारों के परिवेश में इन नृजातीय-चिकित्सा विशेषज्ञों की भागीदारी पर विशेष रूप से केंद्रित शोधकार्य लगभग नह के बराबर है। शोधकार्य के अभाव में पशुधन बाज़ार के संदर्भों में साहित्य के न होने के कारण उसमें कार्यरत नृजातीय-पशु चिकित्सा विशेषज्ञों, उनकी प्रासंगिकता और आर्थिक निहितार्थों की व्यवस्थित जाँच को रेखांकित नहीं किया जा सका है। शोध की इसी खाई को ख़त्म करने और नृजातीय-पशु चिकित्सा विशेषज्ञों के भूमिका को समझने के लिए भारत के विभिन्न राज्यों से छह पशुधन बाज़ारों दभेडी (उत्तर प्रदेश), जयपुर (राजस्थान), चंदूरबाज़ार (महाराष्ट्र), नंजनगुड (कर्नाटक), अलमंदा (आंध्र प्रदेश) और जयंतीगिरी (ओडिशा) में अधययन किया गया जिससे प्राप्त आँकड़ों के आधार पर, यह शोधपत्र इस बात की जानकारी देता है कि पशुधन बाज़ारों में नृजातीय-पशु चिकित्सा विशेषज्ञ कैसे और क्यों महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में लगे हैं और इन आर्थिक क्षेत्रों में उनकी भागीदारी से उन्हें मिलने वाले मौद्रिक और गैर-मौद्रिक लाभों पर भी प्रकाश डालता हैं।

कार्यप्रणाली:

उपरोक्त सभी बाजारों में नृजातीय-पशु चिकित्सा विशेषज्ञों की भूमिका समझने के लिए प्रत्येक बाजार में 6-8 सदस्यों वाली शोध टीमों ने लगभग 45 दिनों की अवधि का क्षेत्रकार्य किया, जिसमें प्रत्येक बाजार के 5-6 बाज़ार दिवस शामिल है. इन बाजार के दिनों में प्रत्येक बाजार के प्रवेश और निकास द्वार से आने जाने वाले विक्रेताओं और खरीदारों से अर्ध-संरचित अनुसूची के माध्यम से आकड़ा एकत्रित किया गया ।यह संख्या बाजारवार 304 (दभेडी, उत्तर प्रदेश); 303 (जयपुर, राजस्थान), 280 (चुंदूरबाज़ार, महाराष्ट्र), 300 (नानजुंगुड, कर्नाटक); 414 (आलमंडा, आंध्र प्रदेश) और 303 (जयंतीगिरी, ओडिशा) थी । बाजार के दिनों में एकत्र की गई जानकारी के अलावा, शोध दलों ने गहन साक्षात्कार करने के लिए आसपास के गाँवों का दौरा किया, और बाजार के दिनों में प्राप्त प्रारंभिक जानकारी के आधार पर किसानों, व्यापारियों, बिचौलियों, सेवा प्रदाताओं और अन्य लोगों से विस्तृत जानकारी ली। इन साक्षात्कारों से मवेशियों के चयन, पशुधन की कीमतों का निर्धारण, बातचीत की प्रक्रिया और बिचौलियों की भूमिका आदि पर आकड़ा प्राप्त किया गया।

स्नो बॉल सैंपलिंग प्रविधि का उपयोग करके विक्रेताओं, क्रेताओं और बिचौलियों की सहायता से बाज़ार में 10-15 नृजातीय-पशु चिकित्सा विशेषज्ञों कर नृवंशवैज्ञानिक (ETHNOGRAPHIC) साक्षात्कार किए गए। इन साक्षात्कारों में उनके ज्ञान अर्जन का स्रोत, उनके कार्यक्षेत्र, उनके द्वारा प्रदान की गई सेवाएँ, पशुधन बाज़ारों में हुए परिवर्तनों पर उनकी राय, सामाजिक मान्यता और आर्थिक प्रतिफल आदि जैसे कई विषयों को सम्मिलित किया गया।

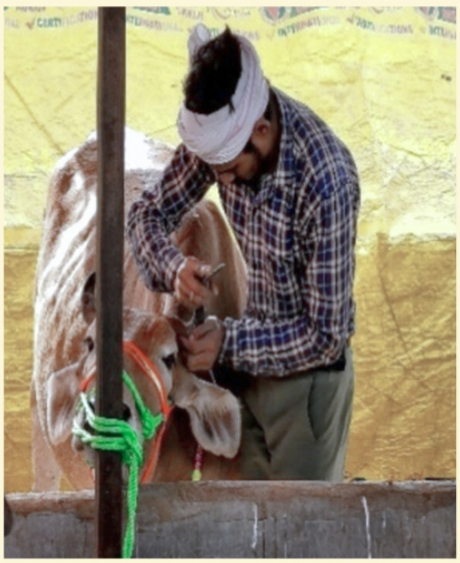

पशु बाजार में कार्यरत सींग एवं खुर तराशने का विशेषज्ञ

भारत में ग्रामीण पशुधन बाज़ार: एक परिचय

भारत भर में साप्ताहिक पशुधन बाज़ार ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं की एक महत्वपूर्ण संस्थागत विशेषता हैं। ये बाज़ार पूरे देश में व्यापक रूप से फैले हुए हैं, और प्रत्येक बाज़ार सप्ताह के एक निर्दिष्ट दिन पर संचालित होता है। इनकी संगठनात्मक संरचनाएँ भिन्न होती हैं: जहाँ कुछ बाज़ार निजी स्वामित्व वाली भूमि पर निजी व्यक्तियों द्वारा स्थापित और प्रबंधित किए जाते हैं, वहीं कई बाज़ार अन्य सार्वजनिक स्थानों पर स्थित होते हैं और राज्य द्वारा अधिदेशित निकायों जैसे बाज़ार समितियों या इसी तरह की नियामक संस्थाओं के प्रशासनिक पर्यवेक्षण के अंतर्गत लगाए जाते हैं। उदाहरण के लिए, आंध्र प्रदेश में, बाज़ार समितियाँ बाज़ार संचालन की देखरेख करती हैं, जबकि उत्तर प्रदेश में, ज़िला पंचायत समितियाँ उनके प्रबंधन अधिकारों की निगरानी और नीलामी के लिए ज़िम्मेदार हैं।

अधिकांश राज्यों में, पशुधन बाज़ार के संचालन का अधिकार एक निश्चित अवधि के लिए निजी व्यक्तियों को नीलाम किया जाता है। सफल बोलीदाताओं को मुख्य रूप से विक्रेताओं और खरीदारों पर लगाए गए प्रवेश और निकास शुल्क के साथ-साथ पशुधन ट्रांसपोर्टरों और खाद्य स्टॉल या अस्थायी कियोस्क के विक्रेताओं से वसूले गए अतिरिक्त शुल्क से आय प्राप्त होती है।

इन बाज़ारों में विविध आर्थिक गतिविधि का पैमाना भी इसी तरह है। व्यापार किए जाने वाले पशुओं की संख्या और संबंधित मौद्रिक लेनदेन की मात्रा कई कारकों पर निर्भर करती है, जिनमें बाज़ार का स्थान, पहुँच, क्षेत्रीय माँग की प्रकृति और विशिष्ट नस्लों के लिए विशेष बाज़ारों की प्रतिष्ठा सम्मिलित है। उदाहरण के लिए, उत्तर प्रदेश में दभेड़ी पशुधन बाज़ार में प्रतिदिन अनुमानित 500-1000 पशुओं की बिक्री होती है, जिसमें बूचड़खाने भेजे जाने वाले और दुधारू पशु दोनों शामिल हैं; इनमें से लगभग 60 प्रतिशत वध के लिए होते हैं। राजस्थान के जयपुर में पशु हटवाड़ा बाजार और आंध्र प्रदेश में अलमंदा बाजार में आम दिनों में लगभग 1,000 पशुओं की आवाजाही होती है और व्यस्त मौसम में 2,500 पशुओं तक की आवाजाही होती है। इसके विपरीत, महाराष्ट्र के अमरावती जिले के चंदूर बाजार में प्रति बाजार दिवस औसतन 734 मवेशी बेचे जाते हैं। ओडिशा में पशुधन बाजार आमतौर पर छोटे पैमाने के होते हैं, जहाँ औसत दैनिक लेनदेन केवल 200-300 पशुओं का होता है।

वित्तीय आवक में भी इसी तरह का अंतर दिखाई देता है। विभिन्न क्षेत्रों के छह बाजारों से प्राप्त अनुमानों के आधार पर, बड़े बाजार एक ही बाजार दिवस पर ₹1 करोड़ से ₹5 करोड़ तक की नकदी का प्रवाह करते हैं। ओडिशा में अध्ययन किए गए छोटे बाजारों में लेनदेन की मात्रा आमतौर पर ₹40 लाख से ₹60 लाख के बीच होती है । किसान भी खासकर जब वे मवेशियों की खरीद और पुनर्विक्रय में शामिल होते हैं व्यापारी या बिचौलिए के रूप में काम कर सकते हैं । व्यापारी अपने और दूसरों के मवेशियों को ढोने के लिए अपने वाहनों का उपयोग कर एक साथ व्यापारी और ट्रांसपोर्टर दोनों के रूप में भी काम कर सकते हैं। प्रत्येक श्रेणी की आनुपातिक भागीदारी बाज़ार के प्रकार के अनुसार बदलती रहती है।वित्तीय आवक में भी इसी तरह का अंतर दिखाई देता है। विभिन्न क्षेत्रों के छह बाजारों से प्राप्त अनुमानों के आधार पर, बड़े बाजार एक ही बाजार दिवस पर ₹1 करोड़ से ₹5 करोड़ तक की नकदी का प्रवाह करते हैं। ओडिशा में अध्ययन किए गए छोटे बाजारों में लेनदेन की मात्रा आमतौर पर ₹40 लाख से ₹60 लाख के बीच होती है । अधिकांश बाज़ारों में, विशेष रूप से शहरी केंद्रों से दूर स्थित बाज़ारों में, किसान संख्यात्मक रूप से अधिक होते हैं। उन बाज़ारों में जहाँ बिक्री मुख्यतः व्यक्तिगत इकाइयों (जोड़े या एकल पशु) के आधार पर न होकर वज़न के आधार पर होती है, व्यापारियों की भागीदारी बढ़ जाती है। उदाहरण के लिए, मुज़फ़्फ़रनगर (उत्तर प्रदेश) की बुधाना तहसील के दभेड़ी पशुपेठ में, 60 प्रतिशत मवेशी बूचड़खानों के लिए हैं। इसके विपरीत, कर्नाटक के नंजनगुड बाज़ार और आंध्र प्रदेश के अलमंदा बाज़ार में, वध के लिए लाए गए पशुओं की गिनती कुल लेन-देन के 5 प्रतिशत से भी कम है। इसी तरह बिचौलियों की प्रमुखता भी अलग-अलग है : किसानों की अधिक भागीदारी वाले बाज़ारों में बिचोलियों की भूमिका ज़्यादा स्पष्ट दिखाई देती है और व्यापारी-प्रधान बाज़ारों में उनकी भूमिका अपेक्षाकृत कम महत्वपूर्ण होती है।व्यापार किए जाने वाले उन पशुधन बाज़ार में जहाँ पशुधन की कुछ प्रजातियाँ भौगोलिक रूप से विशिष्ट होती हैं, की संरचना क्षेत्रों और बाज़ारों के अनुसार भी काफ़ी भिन्न होती है जैसे राजस्थान में ऊँट या हिमालय के सीमावर्ती क्षेत्रों में याक, यह पशुधन अन्य बाज़ार कार्य के आधार पर विशिष्ट हो गए हैं। कुछ पशुधन बाज़ार बैलों के लिए, कुछ दुधारू पशुओं के लिए, और कुछ स्थानीय माँग पैटर्न, पर्यावरणीय परिस्थितियों और सांस्कृतिक प्राथमिकताओं के आधार पर अपनी विशिष्ट श्रेणियों के लिए पहचाने जाते हैं।

पशु हाटवाड़ा, जयपुर, राजस्थान में बाजार के दौरान बछड़े का जन्म

ग्रामीण पशुधन बाज़ारों में नृजातीय-पशु चिकित्सा विशेषज्ञ क्यों ?

अपनी घरेलू दूध की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए या दूध बेचकर अतिरिक्त आय अर्जित करने के लिए ग्रामीण परिवारों का एक बड़ा हिस्सा दुधारू पशु खरीदने के लिए पशुधन बाज़ारों में जाता है। कई किसान कृषि कार्य के लिए बैल और भैंस खरीदने के लिए भी इन बाज़ारों में आते हैं, जबकि एक छोटा समूह—विशेषकर डेयरी किसान—विशेष रूप से प्रतिष्ठित नस्लों की भैंसें खरीदने के लिए आते हैं। वर्तमान अध्ययन में, जिसमें छह पशुधन बाज़ार शामिल थे, 5-6 बाज़ार दिवसों में बाज़ार के प्रवेश द्वार पर संभावित खरीदारों की पहचान की गई। उनके द्वारा खरीदे जाने वाले पशु के प्रकार और खरीद के उद्देश्य के बारे में आँकड़े एकत्र किए गए। जैसा कि अपेक्षित था, गाय, भैंस या बैल खरीदने वाले खरीदारों का अनुपात बाज़ारों में काफी भिन्न था। यह ध्यान देने योग्य है कि खरीदारों में व्यापारियों का भी एक बड़ा हिस्सा शामिल था। ये व्यापारी इस बारे में बहुत स्पष्ट नहीं होते कि वे किस प्रकार या संख्या में मवेशी खरीदना चाहते हैं, क्योंकि उनका विचार हमेशा अच्छा व्यवसाय होता है।

मवेशियों का चयन और विशेषज्ञता की आवश्यकता

संभावित खरीदार चाहे वे किसी भी प्रकार के मवेशी खरीदना चाहें, अक्सर नस्ल के बारे में चयनात्मक होते हैं और पशु की आयु और स्वास्थ्य स्थिति के सटीक अनुमान को लेकर अत्यधिक सतर्क रहते हैं। यह जानकारी आमतौर पर तब सुलभ और विश्वसनीय होती है जब विक्रेता स्वयं घरेलू नस्ल के मवेशियों का विक्रय करने वाले किसान हों। उदाहरण के लिए, अल्मांडा पशुधन बाज़ार में, कई खरीदार पहले विक्रेताओं से यह पूछते देखे गए कि पशु डोड्डी बक्का (उनके अपने पशुशाला में जन्मा और पला-बढ़ा) है या सांता बक्का (बाज़ार से पहले खरीदा गया)। हालांकि, जब विक्रेता अपरिचित होते हैं या दी गई जानकारी संदिग्ध लगती है, तो खरीदार पशुधन के स्वास्थ्य और शारीरिक विशेषताओं की स्वतंत्र रूप से जाँच करना पसंद करते हैं। सभी खरीदारों के पास ऐसा आकलन करने के लिए आवश्यक ज्ञान नहीं होता है, जिससे विशेषज्ञ सहायता की आवश्यकता उत्पन्न होती है। पशुधन व्यापारी इस संबंध में अलग तरीके की सोच रख सकते हैं क्योंकि उनके पास न केवल कुछ बुनियादी नृजातीय-पशु चिकित्सा का ज्ञान होता है, बल्कि वे जोखिम लेने को भी तैयार रहते हैं। इन ग्रामीण साप्ताहिक बाज़ारों में एक उल्लेखनीय कमी यह है कि यहाँ पशुधन खरीदारों की सहायता के लिए किसी औपचारिक, सरकारी व्यवस्था का अभाव है। इस संदर्भ में, भारतीय ग्रामीण समाज की सामाजिक-सांस्कृतिक प्रथाओं में निहित एक दीर्घकालिक पारंपरिक व्यवस्था आवश्यक भूमिका निभाती रही है। यह व्यवस्था पीढ़ियों से चले आ रहे अनुभवजन्य ज्ञान पर आधारित मार्गदर्शन प्रदान करने वाले पशु-वैद्यों, या नृजातीय-पशु चिकित्सा विशेषज्ञों की उपस्थिति में साकार होती है। इन विशेषज्ञों द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाएँ उनकी स्वदेशी विशेषज्ञता, व्यावहारिक अनुभव और प्रायः गैर-मौद्रिक प्रेरणाओं के लिए अत्यधिक मूल्यवान हैं। पाँच बाज़ारों से एकत्रित केस स्टडी और मात्रात्मक आँकड़े आज के पशुधन बाज़ार परिवेश में इन चिकित्सकों की निरंतर प्रासंगिकता और महत्व को रेखांकित करते हैं।

पशुधन मूल्यांकन के आवश्यक

पशुओं की आयु का निर्धारण:

दूध और परिवहन योग्य मवेशियों के खरीदारों के लिए पशु की आयु का निर्धारण पहली शर्त होती है। आयु सम्बन्धी ज्ञान से खरीदार मवेशी की उत्पादक क्षमता और आयु के अनुसार उसके स्वस्थ को समझ पाता है। साथ ही खरीदार आयु की जानकारी के आधार पर ही मवेशी के लिए , मांगी गयी मूल्य की उचितता का आकलन कर खरीद को अंतिम रूप दे पाटा है.

पशु के स्वास्थ्य का आकलन

विक्रेताओं के साथ मूल्य और अन्य शर्तों पर किसी भी औपचारिक बातचीत से पहले, स्वाभाविक रूप से, किसी पशु के स्वास्थ्य का आकलन बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। स्वास्थ्य मूल्यांकन में स्थानीय स्तर पर आधारित मापदंडों की अहम् भूमिका होती है, जिसमें शरीर की बनावट, दिखाई देने वाली बीमारियों की उपस्थिति, और मवेशियों के सक्रियता, पिछले पैरो के बीच की दूरी, दुधारू पशुओं में थन का आकार, शरीर का ताप आदि पहलू शामिल होते हैं। दुधारू पशुओं के सन्दर्भ में खरीदारों के लिए यह आकलन ज्यादा विस्तृत हो जाता है, जिनमे मवेशी की प्रजनन क्षमता और उत्पादकता प्राथमिक चिंता का विषय होती है। इसी प्रकार, यदि बछड़ों को जल्दी परिपक्व होने की प्रत्याशा में खरीदने का प्रस्ताव है, तो देरी से गर्भधारण या कम दूध देने की क्षमता से जुड़ी चिंताएँ व्यक्त की जाती हैं। जो लोग वयस्क गायों या भैंसों की तलाश करते हैं, वे गर्भावस्था के क्रम और दूध उत्पादन के अनुमान की जानकारी को प्राथमिकता देते हैं। जहाँ गर्भावस्था का दावा किया जाता है, वहाँ गर्भधारण की अनुमानित अवस्था और अजन्मे बछड़े के कथित स्वास्थ्य की भी जाँच की जाती है।

पशु के व्यवहार का निरीक्षण करके उसकी गुणवत्ता का आकलन करना

बाज़ार दिवस से पहले गाय को स्नान कराते हुए देखभालकर्ता

भाग्य और सौभाग्य का आकलन:

भाग्य और दुर्भाग्य की धारणाएँ कई समाजों की विश्वास प्रणालियों का अभिन्न अंग हैं। नए मवेशियों को खरीदना अक्सर परिवार में किसी नए सदस्य, जैसे बहू या नवजात शिशु के आगमन के समान प्रतीकात्मक महत्व रखता है, और दोनों को पारंपरिक रूप से घर में समृद्धि और सौभाग्य लाने वाला माना जाता है। इस सांस्कृतिक ढाँचे में, मवेशियों की कुछ शारीरिक विशेषताएँ—जैसे पूंछ का आकार, पूंछ के बाल का रंग, सिर की चौड़ाई, आदि को शुभ सूचक के रूप में समझा जाता है। परिणामस्वरूप, भाग्य के ये कथित संकेतो पशुओं के लेन-देन में निर्णय लेने और बातचीत की प्रक्रियाओं का एक महत्वपूर्ण घटक होटी हैं.

व्यवहार संबंधी विशेषताओं का आकलन

मवेशियों के व्यवहार भी खरीद के लिए एक महत्वपूर्ण कारक होता है क्योकि मवेशियों के साथ ग्रामीण परिवारों में भावनात्मक लगाव होता है और वे उन्हें परिवार के सदस्य के रूप देखभाल भी करते है. इसलिए मवेशियों के व्यवहार एक अहम् कारक होता है. क्योकि इनके अच्छे व्यवहार से दुग्ध निकालने या फिर इनके खेत में उपयोग करने में न केवल आसानी होती है बल्कि घर का हर एक सदस्य आसानी से इनकी देखभाल सुनिश्चित कर पाता है.

सुंदरता, सौन्दर्य, मेल आदि के लिए मूल्यांकन:

मवेशियों का मूल्यांकन शारीरिक स्वास्थ्य,उत्पादकता और व्यवहार के विचारों से आगे इसकी सुंदरता और सौंदर्यपरक आकर्षण द्वारा भी प्रभावित होता है। बैलों के मूल्यांकन के मामले में पशु के चलने का तरीका महत्वपूर्ण होता है। त्वचा के रंग और चमक, शरीर पर बनी धारियाँ और उनकी समरूपता, सीगों के आकार और वक्रता के आधार पर सुंदरता का आकलन भी कई मामलों में मूल्यांकन का आधार होता है। ऐसा माना जाता है कि ये विशेषताएँ न केवल पशु के स्वास्थ्य और आनुवंशिक गुणों को दर्शाती हैं, बल्कि सांस्कृतिक रूप से अंतर्निहित सामंजस्य और संतुलन के आदर्शों के साथ उसके संरेखण को भी दर्शाती हैं। चूँकि बैलों को जोड़े में खरीदा जाता है, इसलिए सौंदर्यात्मक सामंजस्य और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। ऊँचाई, रंग और शारीरिक अनुपात के संदर्भ में पशुओं का मेल, समुदाय के दृश्य और नैतिकतामें बहुमूल्य व्यवस्था और समरूपता के विस्तार के रूप में देखा जाता है। इस प्रकार, मवेशियों की खरीद के निर्णयों में सौंदर्यात्मक निर्णय व्यावहारिक मूल्यांकन को दृढ़ता प्रदान करता है है।

अध्ययन किए गए पशुधन बाज़ारों में नृजातीय-पशु चिकित्सा विशेषज्ञों का संचालन

अध्ययन किये गए बाजारों में नृजातीय-पशु चिकित्सा विशेषज्ञों की उपस्थिति बाजार व्यवहार को पूर्ण करती है. क्योकि उक्त सभी कारकों में स्वास्थ्य का आकलन विशेषज्ञता आधारित है. बाजार में नृजातीय-पशु चिकित्सा विशेषज्ञों की उपस्थिति और भूमिका अक्सर प्रभावशाली और अनौपचारिक रहती है। बाजार के प्रकृति के अनुसार, हर एक खरीदार स्वास्थ्य आकलन में विशेषज्ञ नहीं होता है और अच्छे पशु की खरीद सुनिश्चित करने के लिए पशु का स्वास्थ्य सही होना एक अनिवार्य विषय है. इसलिए सामान्यतौर पर खरीदार अपने या पड़ोसी गाँवों के ऐसे व्यक्तियों को अपने साथ लाते है जो पशु के सामान्य स्वास्थ्य और संबंधित अन्य विशेषताओं का आकलन करने में उन्हें सहायता प्रदान कर सके। विशेष और सामान्य आकलन के परे होने की स्थिति में, खरीदार बाजार में उपलब्ध विशेषज्ञ की सहायता लेते है. इस विभेद के आधार पर कई विशेषज्ञ कुछ विशेष ग्राहकों और परिचितों से जुड़कर अपनी सेवा देते है जबकि कई हर एक बाजार दिवस पर बाजार में अपनी सेवा प्रदान करते है और इस व्यवसाय से वे नियमित तौर पर जुड़े होते है । वे बाजार में अपने मौजूदा परिचितों एवं स्वयं की कुशलता से ग्राहकों की खोज करते हैं । बाद के श्रेणी के चिकित्सकों के लिए यह एक पूर्णकालिक व्यवसाय होता है और उनकी आजीविका का प्राथमिक स्रोत होता है। ये विशेषज्ञ अपने ज्ञान कौशल के कारण कई बार खरीदारों और विक्रेताओं के बीच बातचीत में मवेशी के स्वास्थ्य मूल्यांकन के साथ-साथ एक महत्वपूर्ण मध्यस्थ की भूमिका भी अदा करते हैं। अपने महत्व के बावजूद, ये विशेषज्ञ बड़े पैमाने पर असंगठित तरीके से काम करते हैं । ग्राहकों में उनकी विश्वसनीयता, व्यक्तिगत प्रतिष्ठा और एक भरोसेमंद व्यक्ति के रूप में मान्यता उन्हें अलग पहचान देती है। नृजातीय-पशु चिकित्सक विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि से संबंधित थे लेकिन कुछ समुदाय या जाति जैसे गौड़ा, गोल्ला, कुरैशी आदि इसी विशेषज्ञता के कारण जाने जाते थे । जिनका पारंपरिक जातिगत व्यवसाय पशुपालन और व्यवसाय था।

अध्ययन किए गए पशुधन बाज़ारों में नृजातीय-पशु चिकित्सा विशेषज्ञों का संचालन

अध्ययन किये गए बाजारों में नृजातीय-पशु चिकित्सा विशेषज्ञों की उपस्थिति बाजार व्यवहार को पूर्ण करती है. क्योकि उक्त सभी कारकों में स्वास्थ्य का आकलन विशेषज्ञता आधारित है. बाजार में नृजातीय-पशु चिकित्सा विशेषज्ञों की उपस्थिति और भूमिका अक्सर प्रभावशाली और अनौपचारिक रहती है। बाजार के प्रकृति के अनुसार, हर एक खरीदार स्वास्थ्य आकलन में विशेषज्ञ नहीं होता है और अच्छे पशु की खरीद सुनिश्चित करने के लिए पशु का स्वास्थ्य सही होना एक अनिवार्य विषय है. इसलिए सामान्यतौर पर खरीदार अपने या पड़ोसी गाँवों के ऐसे व्यक्तियों को अपने साथ लाते है जो पशु के सामान्य स्वास्थ्य और संबंधित अन्य विशेषताओं का आकलन करने में उन्हें सहायता प्रदान कर सके। विशेष और सामान्य आकलन के परे होने की स्थिति में, खरीदार बाजार में उपलब्ध विशेषज्ञ की सहायता लेते है. इस विभेद के आधार पर कई विशेषज्ञ कुछ विशेष ग्राहकों और परिचितों से जुड़कर अपनी सेवा देते है जबकि कई हर एक बाजार दिवस पर बाजार में अपनी सेवा प्रदान करते है और इस व्यवसाय से वे नियमित तौर पर जुड़े होते है । वे बाजार में अपने मौजूदा परिचितों एवं स्वयं की कुशलता से ग्राहकों की खोज करते हैं । बाद के श्रेणी के चिकित्सकों के लिए यह एक पूर्णकालिक व्यवसाय होता है और उनकी आजीविका का प्राथमिक स्रोत होता है। ये विशेषज्ञ अपने ज्ञान कौशल के कारण कई बार खरीदारों और विक्रेताओं के बीच बातचीत में मवेशी के स्वास्थ्य मूल्यांकन के साथ-साथ एक महत्वपूर्ण मध्यस्थ की भूमिका भी अदा करते हैं। अपने महत्व के बावजूद, ये विशेषज्ञ बड़े पैमाने पर असंगठित तरीके से काम करते हैं । ग्राहकों में उनकी विश्वसनीयता, व्यक्तिगत प्रतिष्ठा और एक भरोसेमंद व्यक्ति के रूप में मान्यता उन्हें अलग पहचान देती है। नृजातीय-पशु चिकित्सक विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि से संबंधित थे लेकिन कुछ समुदाय या जाति जैसे गौड़ा, गोल्ला, कुरैशी आदि इसी विशेषज्ञता के कारण जाने जाते थे । जिनका पारंपरिक जातिगत व्यवसाय पशुपालन और व्यवसाय था। नृजातीय-पशु चिकित्सक यह ज्ञान और अनुभव अपने वरिष्ठ नृजातीय-पशु चिकित्सकों के अधीन रहकर उनके मार्गदर्शन में प्राप्त करते है जो पारंपरिक गुरु-शिष्य परम्परा की भांति सामाजिक-सांस्कृतिक महत्त्व को स्थापित करता है. चूँकि इस प्रशिक्षण में अनुभवात्मक और अवलोकनात्मक अधिगम, जिसे "करके सीखना" और "देखकर सीखना" कहा जा सकता है, पर बल दिया जाता है, इसलिए प्रशिक्षण अवधि अलग-अलग सदस्यों के लिए अलग-अलग होती है; यह व्यावहारिक मामलों के संपर्क की आवृत्ति और शिक्षार्थी के गुरु के साथ पारिवारिक संबंध के अनुसार भिन्न होती है। जब गुरु पिता या कोई निकट संबंधी होता है, तो प्रशिक्षु जल्दी ही कार्यात्मक दक्षता प्राप्त कर लेते हैं। हालाँकि, एक स्वतंत्र "विशेषज्ञ" के रूप में सामाजिक वैधता और मान्यता प्राप्त करना न केवल शिक्षार्थी की तकनीकी दक्षता पर निर्भर करता है, बल्कि स्थानीय समुदाय में गुरु की सामाजिक पूँजी और प्रतिष्ठा पर भी निर्भर करता है। इस प्रकार, नृजातीय-पशु चिकित्सा अभ्यास में गुरुओं को प्राप्त प्रतीकात्मक पूँजी भी महत्वपूर्ण है।

केस अध्ययन 1- बलराम परीजा का मामला

ओडिशा के कोरापुट ज़िले के जयंतगिरी पशु बाज़ार में घूम रहे लोगों के बीच, एक व्यक्ति सबसे अलग दिखते हैं जिनका नाम है: श्री बलराम परीजा, जो एक 62 वर्षीय किसान है जिन्हें स्थानीय भाषा में गुनिया के नाम से जाना जाता है। श्री बलराम कभी स्कूल नहीं गए, लेकिन उन्होंने पारिवारिक परंपराओं और व्यावहारिक अनुभव से पशुओं के स्वास्थ्य और व्यवहार के बारे में ज्ञान प्राप्त किया है। उन्हें सबसे अलग करने वाली बात यह है कि वे पशु के झुके हुए कान, गति में रुकावट, या खाने के तरीके जैसी छोटी-छोटी बातों आदि का गहन अवलोकन करने में कुशलता प्राप्त है है। बलराम के लिए, ये विशेषताएँ केवल अनोखी नहीं हैं; वे आने वाली चोट या बीमारी का संकेत देते हैं। प्रजनन चक्रों का अनुमान लगाने, मनोदशा में बदलाव की व्याख्या करने और पशु की शारीरिक सक्षमता और उम्र का आकलन करने में उनका उल्लेखनीय कौशल उन्हें बाज़ार में एक महत्वपूर्ण और विश्वसनीय व्यक्ति बनाता है।

एक सामान्य बाज़ार के दिन, बलराम भीड़-भाड़ के बीच एक मुख्य उपस्थिति होते हैं। संभावित खरीदार अपनी खरीदारी को अंतिम रूप देने से पहले उनकी राय अवश्य लेते हैं। वे पशु की उम्र, प्रजनन क्षमता, स्वभाव और उत्पादकता का आकलन करने की उनकी क्षमता को महत्व देते हैं। दूसरी ओर, विक्रेता अपने पशुओं की कीमतों को उचित ठहराने या समायोजित करने के लिए उनके अनुमोदन पर निर्भर करते हैं। इस प्रकार, उनका मूल्यांकन स्थानीय बाजार अर्थव्यवस्था में मूल्य विनियमन और गुणवत्ता आश्वासन के एक अनौपचारिक किन्तु शक्तिशाली तंत्र के रूप में कार्य करता है।

उनकी सलाह के लिए भुगतान आकस्मिक होता है; कभी-कभी यह एक सांकेतिक राशि होती है, और कभी-कभी स्थानीय उत्पाद, लेकिन चाहे जो भी हो, सम्मान स्थिर रहता है। वे उन कई सामुदायिक चिकित्सकों में से एक हैं जो उन जगहों पर आजीविका चलाने में स्थानीय विशेषज्ञता की शक्ति का प्रदर्शन करती है जहाँ सहायता प्रणालियाँ अनुपस्थित हैं।

भावी विक्रेताओं द्वारा नृजातीय-पशु चिकित्सकों से पूर्व परामर्श

भावी पशुधन विक्रेता अक्सर पशुओं को बाजार में लाने से पहले उनकी स्वास्थ्य स्थिति की पुष्टि के लिए स्थानीय नृजातीय-पशु चिकित्सकों से सलाह लेते हैं। यह एहतियाती परामर्श उनके पशुओं को बिक्री के लिए "बीमार" या "अनुपयुक्त" करार दिए जाने के जोखिम से सम्बंधित उनकी चिंता को दर्शाता है, जो उनकी प्रतिष्ठा और बेचने की कीमत दोनों पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। जब स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का पता चलता है, तो विक्रेता अक्सर इन विशेषज्ञों से समय पर और किफायती उपचार प्राप्त करते हैं। आम तौर पर प्रचलित प्रथाओं में पाचन संबंधी गड़बड़ियों के लिए बेकिंग सोडा, पान और सोंठ का मिश्रण देना, या बेचैनी कम करने और पाचन में सहायता के लिए नमक मिला हुआ बैंगन खिलाना आदि सरल उपचार शामिल हैं।

शारीरिक बीमारियों के अलावा, नृजातीय-चिकित्सक जादुई-धार्मिक हस्तक्षेपों के माध्यम से उन बीमारियों का भी इलाज करते हैं जिनके कारण आध्यात्मिक माने जाते हैं। उदाहरण के लिए, आंध्र प्रदेश के अलमंदा पशु बाज़ार में, यह माना जाता है कि जब मवेशियों में नाक से पसीना आना और भूख न लगना जैसे लक्षण दिखाई देते हैं, तो वे आत्माओं से पीड़ित हो सकते हैं। ऐसे मामलों में, इन अलौकिक शक्तियों के प्रभाव को दूर करने के लिए उपचार अनुष्ठान किए जाते हैं।

पशुधन बाज़ारों में नृजातीय-पशुचिकित्सा प्रथाओं का अनुप्रयोग

मवेशियों के खरीदार अपने मवेशियों के चयन का निर्णय लेते समय सावधानी बरतते हैं। उनमें से कई को मवेशियों के स्वास्थ्य और व्यवहार के आकलन से संबंधित कुछ बुनियादी ज्ञान हो सकता है और इसलिए वे नृजातीय-पशुचिकित्सा विशेषज्ञ की सलाह लेने से पहले प्रारंभिक जाँच करवाते हैं। शारीरिक बनावट, जैसे सींगों और आँखों का रंग और आकार की सावधानीपूर्वक जाँच की जाती है। बैलों के मामले में, यदि उन्हें भार ढोने के उद्देश्य से खरीदा जाता है, तो क्रेता विक्रेता से उनकी उम्र जानने के लिए उनके कान खींचते हैं और दाँत गिनने की माँग करेगा|

बैल की फुर्ती सुनिश्चित करने और उसकी चपलता का आकलन करने के लिए उसे कोड़ा मार का देखा जाता है। गाय के सींग और सूली (बालों का गुच्छा) उसकी गुणवत्ता के महत्वपूर्ण संकेतक हैं। गाय के थनों का निरीक्षण उसकी दूध देने की क्षमता की जाँच के लिए किया जाता है। यह देखने के लिए भी गायों को टहलाया जाता है कि वे सीधी चलती हैं या नहीं, क्योंकि सीधी चाल को युवा होने और गुणवत्ता वाली गाय की विशेषता माना जाता है। इन प्रारंभिक अवलोकनों के अलावा, वे अन्य मापदंडों के लिए विशेषज्ञों पर निर्भर करते हैं।

पशु बाज़ार में मवेशियों के चारा खिलाने का स्थान

क. आयु का आकलन :

नृजातीय-पशु चिकित्सा विशेषज्ञों द्वारा आयु का आकलन मुख्यतः दांतों की संख्या, आकार और टूट-फूट पर आधारित होता है। दुधारू पशुओं के मामले में, निश्चित रूप से, आयु का अनुमान बछड़ों की संख्या के आधार पर लगाया जाता है। आंध्र प्रदेश के अलमंदा बाजार में उत्तरदाताओं से प्राप्त जानकारी के अनुसार, यदि मवेशी के बायीं और दायीं ओर के दो दूध के दांत (पाला पल्लू) गिर गए हों, तो मवेशी की आयु 3-4 वर्ष होगी; यदि मवेशियों के चार से ज़्यादा दांत हैं, तो यह दर्शाता है कि वे पाँच साल से ज़्यादा उम्र के हैं, और उनके दांत मज़बूत (गट्टी पल्लू) भी माने जाते हैं, जो दर्शाता है कि वे वयस्क हैं। यदि बैल के दो दांत हैं, तो यह दर्शाता है कि वे दो साल के हैं और इसे नेवादा कहा जाता है। छह से ज़्यादा दांत वाले बैल का अर्थ है कि वे वृद्ध हैं। यदि गाय या भैंस ने केवल एक बछड़े को जन्म दिया है, तो यह दर्शाता है कि उस की उम्र तीन से चार साल है; यदि उसने दो बछड़ों को जन्म दिया है, तो यह दर्शाता है कि वह पाँच से छह साल की है; यदि यह तीसरा प्रसव या गर्भावस्था है, तो उसकी उम्र सात से नौ साल होने का अनुमान है।

ख. सामान्य बीमारियाँ जिनका आकलन किया जाता है

सामान्य स्वास्थ्य जाँच के एक भाग के रूप में, नृजातीय पशु चिकित्सा विशेषज्ञ कुछ सामान्य बीमारियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं जिनका वे अवलोकन के माध्यम से निदान कर सकते हैं। आंध्र प्रदेश के अलमंदा बाज़ार में, विशेषज्ञों ने निम्नलिखित बीमारियों और उनसे जुड़े लक्षणों का निरीक्षण किया।कर्नाटक के नंजगुड बाज़ार में, नृजातीय-पशु चिकित्सा विशेषज्ञों ने सक्रियता और कुछ शारीरिक लक्षणों से संबंधित अवलोकनों के अलावा, मूत्र और गोबर के रंग और बनावट का भी परिक्षण करते है। उदाहरण के लिए, चेहरे का फीका पड़ना और गहरे भूरे रंग का मूत्र मवेशियों में बीमारी के शुरुआती संकेतों के रूप में देखा जाता है। चबाने का ठीक से न होना या न चबाना बीमारी का एक और महत्वपूर्ण लक्षण है। मुँह से दुर्गंध आना, जीभ पर काली नसें आना बुखार का संकेत माना जाता है। गाय या बैल की सक्रियता का पता मुख्यतः उनके चबाने और साँस लेने के तरीके को देखकर लगाया जाता है। यदि चबाने की क्रिया नहीं हो रही है या मवेशी के पेट को दबाने पर 'धप' जैसी आवाज़ आती है, तो यह आंतों में किसी समस्या का संकेत है। वे कालू मट्टू बई ज्वारा (मुँहपका रोग), कसार रोग, बेधी (दस्त) या दुनाराय की भी पहचान करने का प्रयास करते हैं। मुँहपका रोग की पहचान गाय, बैल या भैंस पर परतों के निर्माण पर आधारित होती है। इसी प्रकार, आँखों के संक्रमण का भी सावधानीपूर्वक अवलोकन किया जाता है।

बीमारी के प्रकार	लक्षण
कल्लू जदुपुलू	बार-बार पैर उठाना और चलने में कठिनाई प्रदर्शित करना, घास खाने या पानी पीने से बचना।
नोरु जदुपुलू	न पानी पीते हैं, न खाते हैं, और न ही मवेशियों के होठों में कोई हलचल होती है।
मुक्कू जदुपुलू	नाक के नीचे/पास त्वचा पर घाव (कट, अल्सर और चकत्ते) हो जाना और पसीना आना|
सिराला जब्बु	दुधारू पशुओं के निप्पलों में सूजन आ जाती है; प्रभावित क्षेत्र नरम और लाल रंग का हो जाता है।
बर्रा जब्बु	मवेशी बेचैनी, अनियमित व्यवहार दिखाते हैं और अपना सिर सभी दिशाओं में घुमाते रहते हैं|
पंडी रोगम; पोत्ता पुन्गु	अधिक भोजन के कारण पाचन विकार।
कल्ला पुसलू	आँखों में संक्रमण
पुक्कालू	त्वचा के संपर्कों का निरीक्षण
उरीदी पोट्टू	पूँछ में संक्रमण
कोदिसेलु	परजीवी टिक्स की उपस्थिति
पोद्दुमु वपु	निप्पल में सूजन

ग. गर्भावस्था निदान

संभावित खरीदारों की ओर से पशुधन बाज़ारों में एक महत्वपूर्ण माँग गर्भावस्था निदान है। मवेशियों की गर्भावस्था की अवस्था उनकी कीमत तय करने में एक महत्वपूर्ण कारक होती है; इसलिए किसी भी मवेशी बाज़ार में नृजातीय-पशु चिकित्सा विशेषज्ञों की माँग होती है। जयपुर के पास पशु हटवाड़ा के पशुधन बाज़ार में 'थपैया' और दभेडी पशु पेठ में 'हथैया' (नृजातीय-पशु चिकित्सक) पारंपरिक रूप से 'ट्रांसरेक्टल पैल्पेशन' (बॉन्ड एट अल., 2019) के माध्यम से गर्भावस्था निदान करते हैं। इस बाज़ार में आने वाले थपैया का आयु वर्ग 22 वर्ष से 66 वर्ष के बीच है। इस बाज़ार में साक्षात्कार किए गए सभी उत्तरदाताओं ने बताया कि उन्हें कम उम्र में ही इस प्रथा से परिचित कराया गया था। एक थपैया पशु के मलाशय क्षेत्र के माध्यम से अपना हाथ पशु के शरीर के अंदर डालता है और गर्भाशय तक पहुँचता है। फिर वह दाने जैसी संरचनाओं की जाँच करने के लिए गर्भाशय की दीवार को चुटकी बजाते हुए तोड़ देता है। इन संरचनाओं का उपयोग भ्रूण की प्रारंभिक आयु-निर्धारण के लिए किया जाता है। ऐसी किसी भी संरचना का न होना पशु के गर्भवती न होने का संकेत है। इस बाजार में, उन्होंने ऐसी प्रतिष्ठा अर्जित की है कि किसानों और व्यापारियों की राय है कि वे दुधारू मवेशियों के गर्भाशय में भ्रूण की सटीक गर्भावस्था की अवस्था और उम्र बताने में एलोपैथिक पशु चिकित्सकों से बेहतर हैं। उनमें से अधिकांश पीढ़ियों से इसका अभ्यास कर रहे हैं। भ्रूण की आयु निर्धारित करने की प्रथा को चिकित्सकों द्वारा बुद्धि का उपहार माना जाता है, कुछ ऐसा जो 'हर किसी को नहीं दिया जाता है।' यह भी ध्यान रखना दिलचस्प है कि इनमें से कुछ चिकित्सक भ्रूण की आयु निर्धारित करने में डॉक्टरों के अनुभव को पार करने पर गर्व करते हैं। कथित तौर पर एक कुशल थपैया 27 दिनों से लेकर 2 महीने तक के भ्रूण की प्रारंभिक आयु निर्धारित कर सकता है, जबकि एक पशु चिकित्सक केवल 2-3 महीने से अधिक की उम्र की पुष्टि कर सकता है। टीम ने पाया कि बूढ़े या युवा, उनमें से कोई भी जानवरों की जांच के लिए किसी भी सुरक्षा उपाय या एहतियाती उपकरण, जैसे दस्ताने, का उपयोग नहीं करता है।

केस अध्ययन 2- (थपैया')

वह एक व्यापारी भी हैं जिनका इस बाज़ार में एक स्थायी शेड है। उनके पिता भी इसी पेशे में थे और वह मवेशियों के साथ पले-बढ़े और अपने पिता के काम को देखते रहे। उन्होंने इस प्रथा के अपने शुरुआती अनुभवों के बारे में बताया। जब वह 7-8 साल के थे, तो उनके पिता ने उन्हें इस प्रक्रिया की बारीकियाँ सिखाने के लिए उनका हाथ एक भैंस के गर्भाशय में डाल दिया था। उन्होंने गर्व से बताया कि उनके भाई-बहनों में से कोई भी यह नहीं सीख पाया, और कहा कि उनमें से वह अकेले 'प्रतिभाशाली' हैं। उन्होंने यह प्रथा कुछ अन्य युवकों को भी सिखाई है जो मवेशी व्यापार में रुचि रखते हैं और अपने कौशल को निखारना चाहते हैं। उन्होंने आगे कहा कि, हालाँकि इसे सीखा जा सकता है, कुछ व्यक्तियों में यह जन्मजात होता है और वह केवल कौशल को निखारने और बुनियादी ज्ञान साझा करने में मदद करते हैं।

व्यवहार संबंधी विशेषताओं का मूल्यांकन :

जैसा कि पहले बताया गया है, व्यवहार संबंधी विशेषताओं का सावधानीपूर्वक मूल्यांकन करना ज़रूरी है। अक्सर ग्रामीण लोग गाय, बैल, भैंस या यहाँ तक कि बछड़े की विशेषता बताने के लिए विशिष्ट शब्दावली का इस्तेमाल करते हैं। आंध्र प्रदेश के अलमंदा बाज़ार में नृजातीय-पशु चिकित्सा विशेषज्ञों द्वारा इस संबंध में दिए गए संक्षिप्त विवरण उदाहरण देने योग्य हैं।

स्थानीय नाम	विवरण
चिन्नाम्माथिगुंडू	ऐसे मवेशी खासकर गायें जो दूध दुहते समय सहयोग नहीं करती ।
नालुका पोतु	ऐसे मवेशी जो अपनी जीभ मरोड़ते हैं और मिट्टी खाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप अंततः पाचन संबंधी समस्याएँ होती हैं।
कालू जदुपु	ऐसे मवेशी जो असामान्य रूप से पैर उठाकर चलते हैं; उनके बालों में रोंगटे खड़े हो जाते हैं।
मित्तागुदुलुपैय्या	ऐसे बछड़े जो 6-8 महीने तक की उम्र तक पालतू नहीं बनाए जा पाते।
दुम्प्पा कोमु	मोटे, मजबूत सींग वाले मवेशी; जो आमतौर पर आज्ञाओं का पालन नहीं करते।
मंदमति	धीमी गति से चलने वाले और आलसी मवेशी।
मंदाकोदी	ऐसे मवेशी जो जिद्दी और कम बुद्धिमान होते हैं।
गंडू गोड्डू	बड़े माथे वाले मवेशी; जिन्हें अवज्ञाकारी और मनमौजी मान जाता है।
दोंगबुड्डी पसुवु	ऐसी गाय जिसके थन नरम और लचीले हो जाते हैं जब बछड़ा दूध पीने जाता है और जब बछड़ा दूर चला जाता है तो सख्त या कठोर हो जाते हैं।
तिन्गारा गोड्डू	बेचैन मवेशी जो लगातार घूमते रहते हैं और एक जगह नहीं टिकते।
डोंगा गोड्डू	काली या सफेद पलकों वाले मवेशी; अन्य मवेशियों और मनुष्यों के प्रति आक्रामक माने जाते हैं।
रस रेपालू	लाल पलकों वाले मवेशी; जानवरों और मनुष्यों के प्रति हिंसक माने जाते हैं।
कटुका कल्लू	काली पलकों वाले मवेशी, आक्रामक माने जाते हैं। सफेद शरीर और काले सिर वाले बैल को कटुका कल्लू एडू भी कहा जाता है और डोंगा गोड्डू माना जाता है।

पशुधन बाज़ारों में नृजातीय पशु चिकित्सा विशेषज्ञों की सेवाओं की बढ़ती माँग के कारण

पशुधन बाज़ारों के प्रतिभागियों ने बताया कि समय के साथ इन बाज़ारों में महत्वपूर्ण संरचनात्मक और कार्यात्मक परिवर्तन हुए हैं। सबसे उल्लेखनीय परिवर्तनों में से एक है, पेशेवर पशुधन व्यापारियों की बढ़ती प्रमुखता और उसके अनुरूप अपने पशुओं को बेचने वाले किसानों की प्रत्यक्ष भागीदारी में कमी है। इस बदलाव ने बाज़ार की सामाजिक पारिस्थितिकी को बदल दिया है। जहाँ पहले लेन-देन दीर्घकालिक सामुदायिक संबंधों में अंतर्निहित थे, विश्वास, पारस्परिकता और प्रतिष्ठा संबंधी जवाबदेही के मानदंडों द्वारा निर्देशित थे, वहीं समकालीन बाज़ार की अंतःक्रियाएँ व्यावसायिक तर्कों और लाभ-प्रेरित उद्देश्यों से प्रभावित होती जा रही हैं।

इस बदलते संदर्भ में, खरीदार अक्सर गलत बयानी या धोखाधड़ी की संभावना के बारे में गहरी चिंता व्यक्त करते हैं। बाज़ार के लेन-देन में संबंधपरक विश्वास के क्षरण और पशुधन खरीद में शामिल उच्च आर्थिक दांवों ने अधिक कठोर और स्वतंत्र स्वास्थ्य आकलन की तीव्र माँग को जन्म दिया है। परिणामस्वरूप, नृजातीय पशु चिकित्सा विशेषज्ञों की भूमिका अधिक प्रमुख हो गई है।

इस बढ़ती निर्भरता में योगदान देने वाली एक समानांतर प्रक्रिया नृजातीय पशु चिकित्सा ज्ञान के समुदाय-व्यापी प्रसारण में क्रमिक गिरावट है। ऐतिहासिक रूप से, अधिकांश पशुपालक परिवारों के पास पशु स्वास्थ्य प्रथाओं का एक बुनियादी भंडार होता था, जिसे अवलोकन, पारिवारिक निर्देश और अनुभवात्मक शिक्षा के माध्यम से अनौपचारिक रूप से प्राप्त किया जाता था। किसी विशेषज्ञ से संपर्क करना आमतौर पर केवल असाधारण परिस्थितियों में ही आवश्यक होता था, जिसमें जटिल या अपरिचित परिस्थितियाँ शामिल होती थीं। हालाँकि, जैसे-जैसे कृषि और आजीविका के पैटर्न बदले हैं, युवा पीढ़ी तेजी से पशु-आधारित व्यवसायों से दूर होती जा रही है, और इस ज्ञान को बनाए रखने के लिए आवश्यक दैनिक संपर्क कम होता जा रहा है। परिणामस्वरूप, जो कभी व्यापक, साझा जानकारी थी, वह अधिक विशिष्ट हो गई है और चिकित्सकों के एक छोटे समूह के हाथों में केंद्रित हो गई है। आम विशेषज्ञता का सिकुड़ता आधार, बढ़ती बाजार जटिलता और व्यावसायीकरण के साथ मिलकर, सामूहिक रूप से नृजातीय पशु चिकित्सा विशेषज्ञों की माँग को मजबूत कर रहा है।

अनुवाद कार्य: डॉ. नंदिता साहू

नियुक्तियाँ

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण में जुलाई से सितंबर 2025 के मध्य कई प्रतिभाशाली युवाओं की मानवविज्ञानी, अनुसंधान सहयोगी(शा.) एवं अनुसंधान सहयोगी(सां), ध्वनि तकनीकी जैसे विभिन्न पदों पर नियुक्ति की गई। इनमें श्री डालिबंधू पुक्कल, श्री सात्यकी पॉल, श्री शुभेंदु पात्रा, सुश्री अंजलि सिंह, सुश्री छन्दिता बासु को मानवविज्ञानी(सांस्कृतिक) के पद पर नियुक्त किया गया। संस्थान को विश्वास है कि ये सभी नव-नियुक्त पदाधिकारी अपने ज्ञान कौशल के माध्यम से संस्थान के शोध एवं अकादमिक कार्यों को नई दिशा प्रदान करेंगे। ये अधिकारी अपने दायित्वों का निष्ठा, समर्पण और उत्कृष्टता के साथ निर्वहन करेंगे।

डॉ. शुभेंदु पात्रा
मानवविज्ञानी(सांस्कृतिक)

डॉ. दलिबंधु पुक्काला
मानवविज्ञानी(सांस्कृतिक)

सुश्री छंदिता बसु
मानवविज्ञानी(सांस्कृतिक)

श्री सात्यकी पॉल
मानवविज्ञानी(सांस्कृतिक)

श्रीमती अंजलि सिंह
मानवविज्ञानी(सांस्कृतिक)

श्री शशि कुमार
मानवविज्ञानी(सांस्कृतिक)

श्रीमती रिमी दत्ता
अनुसंधान सहयोगी (सां)

श्री हरनेक सिंह धाकर
अनुसंधान सहयोगी (सां)

श्री सैयद आयान आलम
अनुसंधान सहयोगी (सां)

श्री दसारी रमेश रेड्डी
अनुसंधान सहयोगी (सां)

श्री नंददुलाल साहू
अनुसंधान सहयोगी (सां)

सुश्री श्रेयशी पाल
अनुसंधान सहयोगी (सां)

श्री कुशाग्र बंसल
अनुसंधान सहयोगी (सां)

श्री सुभ्रजीत मुर्मू
अनुसंधान सहयोगी (सां)

श्री नरेश कुमार मीणा
अनुसंधान सहयोगी (सां)

श्री विनोद कुमार मीणा
अनुसंधान सहयोगी (सां)

नियुक्तियाँ और पदोन्नति

श्री अभिक रॉय
अनुसंधान सहयोगी(शा.)

श्री नरसिम्हन एन.
अनुसंधान सहयोगी(शा.)

श्री न्गारान्मी मारेई
अनुसंधान सहयोगी(शा.)

श्री सम्यक जैन
अनुसंधान सहयोगी(शा.)

सुश्री शताब्दी बनिक
अनुसंधान सहयोगी(शा.)

श्री विशेष कुमार सिंह
अनुसंधान सहयोगी(शा.)

श्री संदीप दास
अनुसंधान सहयोगी
(भाषाविज्ञान)

श्री रमेश्वर कुमार मीणा
अनुसंधान सहयोगी
(पारिस्थितिकी)

सुश्री रश्मि जायसवाल
कनिष्ठ अनुवादक(प्रतिनियुक्ति)

श्री आर. बालाजी
कनिष्ठ अनुवादक(प्रतिनियुक्ति)

श्री गौरव कुमार सोनी
कनिष्ठ अनुवादक(प्रतिनियुक्ति)

श्री सुदिन बिस्वास
ध्वनि तकनीशियन

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण परिवार की ओर से सभी नव-नियुक्त युवाओं को उज्ज्वल भविष्य एवं सफल कार्यक्षेत्र के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

डॉ. करुणा शंकर पाण्डेय, सहायक मानवविज्ञानी(सांस्कृतिक)

इस तिमाही के दौरान सर्वेक्षण के डॉ. करुणा शंकर पाण्डेय, सहायक मानवविज्ञानी (सांस्कृतिक) के पद पर पदोन्नत हुए और उन्हें पूर्वी-क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता में नियुक्त किया गया।

सेवानिवृति

इस तिमाही के दौरान अंडमान–निकोबार क्षेत्रीय केंद्र में पदस्थ डॉ. सुमिताभ चक्रवर्ती, सहायक मानवविज्ञानी (सांस्कृतिक), एवं मध्य–क्षेत्रीय केंद्र, नागपुर में कार्यरत श्रीमती आशा एम. सुते, कंप्यूटर संगणक, जुलाई माह में अपनी दीर्घकालीन एवं सराहनीय सेवाओं के उपरांत सेवानिवृत्त हुए।

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण उनके द्वारा संस्था के शैक्षणिक, शोधात्मक एवं प्रशासनिक कार्यों में दी गई निष्ठावान, समर्पित और सराहनीय सेवाओं के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करता है। अपने कार्यकाल के दौरान दोनों अधिकारियों ने उच्च व्यावसायिकता, कर्मठता और उत्तरदायित्व-बोध का परिचय देते हुए संस्थान के उद्देश्यों को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके अनुभव, ज्ञान और कार्यशैली ने न केवल सहकर्मियों को प्रेरित किया, बल्कि संगठन की कार्यसंस्कृति को भी समृद्ध किया। सर्वेक्षण यह आशा करता है कि जीवन के इस नए चरण में आप उत्तम स्वास्थ्य, मानसिक शांति और पारिवारिक सुख का आनंद लेंगे तथा अपनी रुचियों और अभिरुचियों को पूर्ण करने के लिए पर्याप्त अवसर प्राप्त करेंगे। भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण आपके भावी जीवन में निरंतर सफलता, संतोष, सम्मान और समृद्धि की हार्दिक कामना करता है।

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (ANSI) में डॉ. सुमिताभ चक्रवर्ती के विदाई समारोह के दौरान।

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (ANSI) में श्रीमती आशा एम सुते के विदाई समारोह के दौरान।

संपादक की कलम से

त्रैमासिक न्यूज़लेटर के नवीनतम अंक के प्रकाशन पर मैं सर्वेक्षण परिवार को हार्दिक बधाई देती हूँ। आप सभी के प्रगतिशील दृष्टिकोण और ज्ञानवर्धक योगदान ने इसे संभव बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। निदेशक महोदय की सार्थक पहल और मार्गदर्शन में इसका प्रथम हिंदी संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है, जो हम सभी के लिए गर्व का विषय है।

इस अंक में शामिल लेख शोधकर्ताओं द्वारा क्षेत्रीय कार्य दौरे के दौरान संकलित तथ्यों और सूचनाओं पर आधारित हैं। इन लेखों की तथ्यात्मकता और शोधपूर्ण प्रस्तुति ने सर्वेक्षण के मानवविज्ञान संबंधी कार्यों को एक नई दिशा और गहराई प्रदान की है।

मानवविज्ञान केवल मानव जीवन का अध्ययन भर नहीं है, बल्कि यह हमारी सामाजिक संरचनाओं, सांस्कृतिक विविधताओं और जैविक विकास को समझने का महत्वपूर्ण विज्ञान है। भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण अपने विस्तृत अध्ययनों और सटीक शोध के माध्यम से देश की विविधता को संरक्षित करने और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने का अमूल्य कार्य कर रहा है।

यह संस्था न केवल पारंपरिक एवं जनजातीय संस्कृतियों का दस्तावेजीकरण करती है, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय परिवर्तनों के प्रभावों का भी गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती है। भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण की शोधपरक प्रकाशन गतिविधियाँ नीति निर्माण, सांस्कृतिक संरक्षण और सामाजिक जागरूकता को नई दिशा प्रदान करती हैं। यह प्रकाशन केवल ज्ञान का स्रोत ही नहीं, बल्कि समाज के संतुलित विकास और स्थायित्व के महत्वपूर्ण साधन भी हैं।

मानवविज्ञान के माध्यम से सांस्कृतिक विविधता, सामाजिक संरचना और जैविक पहचान की समझ विकसित कर हम एक अधिक संवेदनशील, समृद्ध और सामंजस्यपूर्ण समाज की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

नंदिता साहू
हिंदी अधिकारी

संपादक मंडल

मार्गदर्शक
श्री सुदर्शन वैद्य, संग्रहालय पालक

संपादन एवं तकनीकी सहयोग
श्रीमती शशि बाला पाठक,कनिष्ठ अनुवादक, सुश्री सोहिनी घोष,वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता

आवरण पृष्ठ: कोंडारेड्डी जनजाति की पारम्परिक नृत्य प्रस्तुति

अंतिम पृष्ठ : आंध्र प्रदेश की बोंडो जनजाति की दो महिलायें , एक सामान्य दिन में |

छायाचित्र श्रेय: श्री श्रीदाम कुंडू, फोटोग्राफर

ANTHROPOLOGICAL SURVEY OF INDIA

MINISTRY OF CULTURE
GOVERNMENT OF INDIA

EN 79, STREET NUMBER 18, NEAR COLLEGE MORE, EN BLOCK,
SECTOR V, BIDHANNAGAR, KOLKATA, WEST BENGAL 700091

EMAIL: NEWSLETTER@ANSI.GOV.IN | WEBSITE : WWW.ANSI.GOV.IN